चकमक

अप्रैल, 2005 बाल विज्ञान पत्रिका रु. 10.00

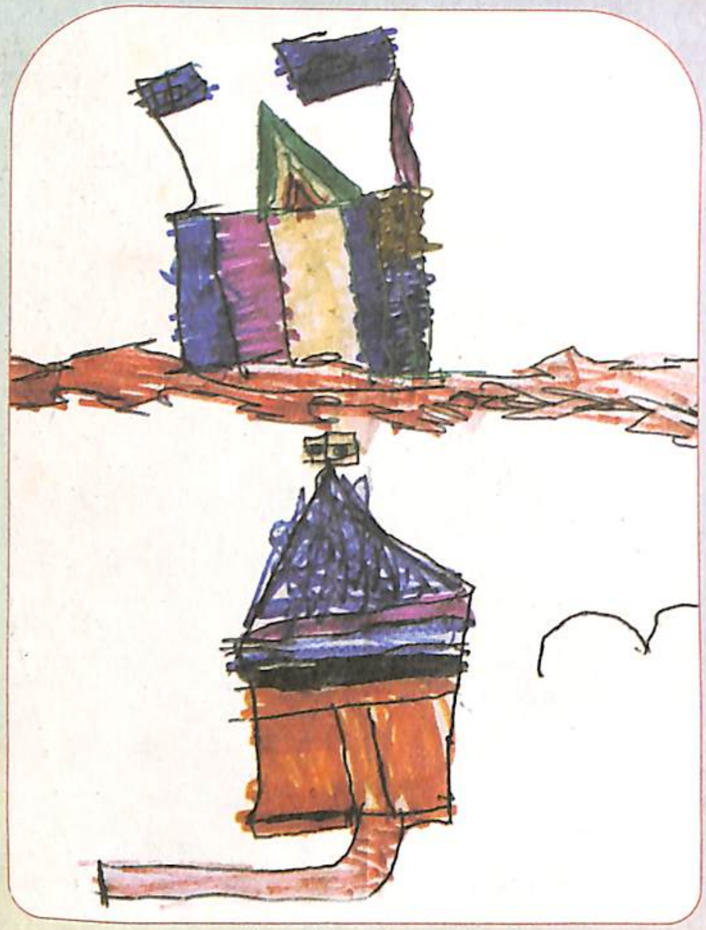

अभय जैन, डोंगरगाँव, छत्तीसगढ़

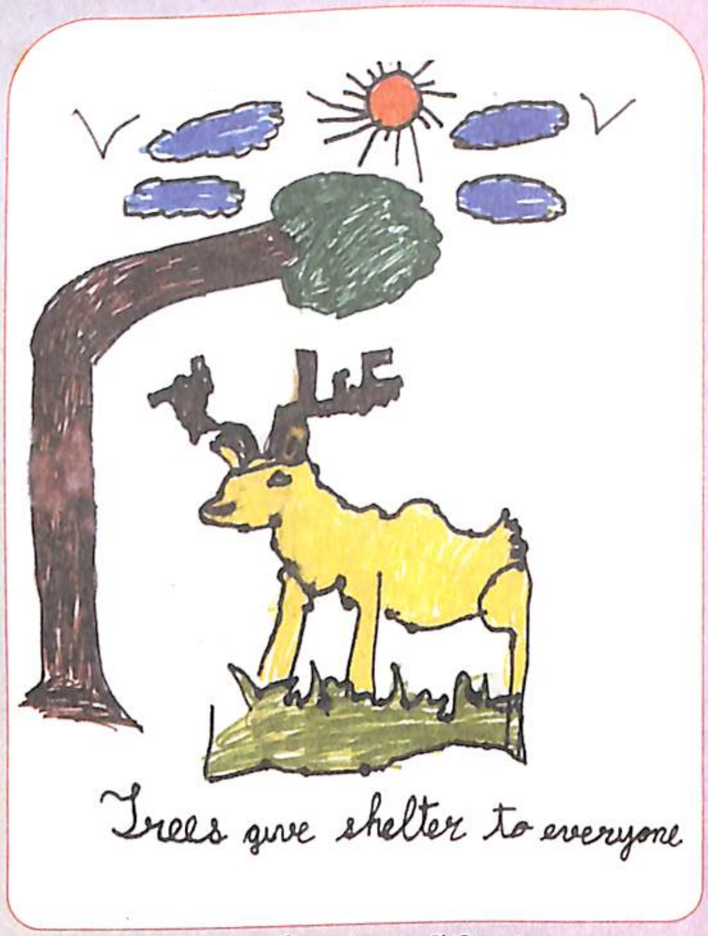

एम. साहिल *(पता नहीं लिखा)*

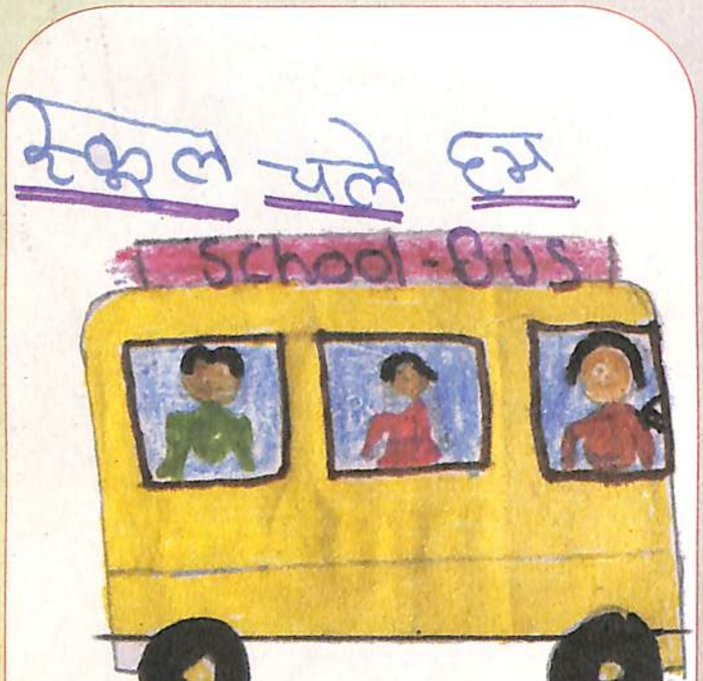

शुभम पांडे, तीसरी, भोपाल, म.प्र.

फरेका, पहली, भोपाल, म.प्र.

आवरण कृति : जया विवेक

चकमक

वर्ष - 20 अंक -8

अप्रैल, 2005

क्या-क्या है इस अंक में

विशेष लेख

ओले 12

संतुलन-एक आसान... 16

यह पेड़ ही है 40

कहानी

युद्ध 10

एक गुस्सैल किताब 33

कविता

हो गया पूरा पेपर 14

जब मम्मी-पापा बच्चे थे 9

गली-गली के खेल 21

तुम भी बनाओ- तितली 38

एक मज़ेदार प्रयोग 39

हर बार की तरह

इस अंक में 1

इस बार की बात 2

मेरा पन्ना 3

पुस्तक अंश 22

चित्र पहेली 24

पुस्तक चर्चा 26

माथापच्ची 28

चकमक समाचार 30

एकलव्य एक स्वैच्छिक संस्था है जो शिक्षा और जनविज्ञान के क्षेत्रों में कार्यरत है। चकमक, एकलव्य द्वारा प्रकाशित अव्यावसायिक पत्रिका है। चकमक का उद्देश्य बच्चों की स्वाभाविक अभिव्यक्ति, कल्पनाशीलता, कौशल और सोच को स्थानीय परिवेश में विकसित करना है।

इस बार की बात...

गर्मियों की छुट्टियों का यह मौसम अक्सर मुझे सालों पीछे ले जाता है। उन दिनों ये छुट्टियाँ कुछ खास हुआ करती थीं। इम्तहान हुए नहीं कि कहीं जाने की तैयारी शुरू हो जाती। कहाँ जाएँगे यह तो पिछली छुट्टियों में ही तय हो चुका होता। ऐसी ही छुट्टियाँ मेरे ननिहाल देवबन्द में आईं। सहारनपुर के पास एक छोटी-सी जगह। छोटा-सा स्टेशन। खाली-खाली से रास्ते। पहली बार मैं रिक्शे पर बैठी थी। अजीब-सी सवारी थी। सीट नीचे की ओर फिसलती-सी लगती। मैं माँ से चिपककर जा बैठी। रास्ते में गन्ने के खेत आए। फिर आया शक्कर का कारखाना। रास्ते में लोग रिक्शे, बैलगाड़ी, ठेलों पर गन्ने लिए जाते दिखे। इसी रास्ते में पहली बार मुझे गन्ने और शक्कर का रिश्ता पता चला।

आगे एक मस्जिद-सी इमारत दिखी। पता चला वह अरबी मदरसा है। एशिया का सबसे बड़ा मदरसा। दूर-दूर से तालिबे इल्म आते हैं यहाँ। यहाँ इतनी छोटी जगह पर क्यों बनाया इसे? तालिबे इल्म यानी क्या? ढेरों सवाल और ढेरों ज़वाब। अब दोनों ओर दुकाने दिखने लगी थीं। साइकिल रिक्शा था कि ज़ोरों से दौड़ा जा रहा था। अचानक जाने क्या हुआ कि मैं ज़मीन पर औंधे मुँह गिरी और मेरे ऊपर बक्सा आ गिरा। ज़रा में छोटी-सी भीड़ ने हमें घेर लिया। कोई बक्सा उठा रहा था। कोई मेरे हाथ-पाँवों की सलामती की दुआ माँग रहा था। कोई पानी ला रहा था। माँ ने कहा पहली बार बैठी थी। इसलिए ठीक से नहीं बैठी थी शायद। खैर फिर से सफर शुरू हुआ। इस बार रिक्शेवाला बहुत ही धीरे-धीरे चला रहा था। रास्ते भर अफसोस करता रहा। मेरा हाल पूछता रहा। कहाँ से आए हैं, कहाँ जाएँगे, घर में कौन कौन हैं सब पूछ डाला।

घर पहुँचे तो नानी, मामा, मामी, भाई-बहनों से देर तक गले मिलाई होती रही। रिक्शे की दास्तान सुनकर पहले तो खूब हँसें, फिर कुछ चिन्ता भी ज़ाहिर की। पलक झपकते दो महीने उड़ गए।

रात को खाने के बाद आँगन में चारपाइयाँ बिछ जातीं। और शुरू हो जाते किस्से। अथाह किस्से। इन किस्सों में कभी पाकिस्तान पहुँचते जहाँ नाना होते जो हर शाम कुर्ते की जेबों में मेवे भर के लाते। वैसे ही जैसे आज मूँगफली खाई जाती है। किसी किस्से में हिंदुस्तान का बँटवारा होता। किसी में हमारी दुकानें होती - पहले साबुत, फिर जली हुई। तो एक बार-बार सुनाए जाने वाले किस्से में हमारी सिलाई मशीन आती। बँटवारे के वक्त इसे मामा रास्ते में छोड़ आए थे। अमृतसर होता जहाँ मामा कपड़ों की फेरी लगाते थे। फिर अन्त में देवबन्द आता। और नानी की हिम्मत का किस्सा, नानी के विश्वास का किस्सा। जहाँ बसने का निर्णय लेने पर उन्हें बहुत कुछ सुनना पड़ा था। "जिन्होंने भगाया उन्हीं लोगों के बीच रहोगी। वो भी सात बच्चों को लेकर।" पर नानी रहीं। जीवन भर रहीं। खुशी से रहीं।

किस्सों से अरबी मदरसा कैसे छूटता ... एक कमरा है जो अक्सर बन्द रहता है। यहाँ वे आते हैं जिनकी पढ़ाई के दौरान मौत हो गई। उस्ताद को भले ही कुर्सियों पर कोई न दिखे पर वे वहाँ होते हैं। खुशबू से उनके होने का पता चलता है। ऐसे तमाम किस्से होते। हर बार किस्से रातों से कहीं लम्बे निकलते।

छुट्टियाँ पूरी तरह से छुट्टियाँ हुआ करती थीं। आज की तरह जब न इम्तिहान के बाद महीने भर की पढ़ाई होती थी, न ढेर सारे होमवर्क का बोझ छुट्टियों पर लदा होता। न समर कैम्प का ज़ोर। अब छुट्टियाँ इतनी हल्की फुल्की कहाँ रहीं। फिर भी उम्मीद है इस बार तुम्हारी छुट्टियाँ दिलकश बनेंगी।

● चकमक

चकमक

मासिक बाल विज्ञान पत्रिका

वर्ष 20 - अंक-8 अप्रैल 2005

सम्पादन
विनोद रायना
अंजलि नरोना
शशि सबलोक
टुलटुल विश्वास
सुशील शुक्ल

विज्ञान परामर्श
सुशील जोशी

वितरण
कमल सिंह
अनिल लोखण्डे
मनोज निगम

सहयोग
राकेश खत्री
शिवनारायण गौर

पत्र/चंदा/रचना भेजने का पता

एकलव्य
ई-7/एचआईजी-453,
अरेरा कॉलोनी,
भोपाल-462 016 (म.प्र.)
फोन - 2463380
eklavyamp@mantrafreenet.com

कवर का कागज़ - यूनीसेफ के सौजन्य से

चंदे की दरें

एक प्रति	:	10.00 रुपए
छमाही	:	50.00 रुपए
वार्षिक	:	100.00 रुपए
दो साल	:	180.00 रुपए
आजीवन	:	1000.00 रुपए

सभी में डाक खर्च हम देंगे।

चंदा, मनीऑर्डर/ड्राफ्ट/चैक से एकलव्य के नाम पर भेजें। भोपाल से बाहर के चैक में बैक चार्ज 30.00 रुपए अतिरिक्त जोड़ें।

मोटू कुत्ता

एक कुत्ता था। वह बहुत चालक था। उसका नाम मोटू था। वह सब घर से रोटी लेकर खा लेता था। एक आदमी खेत पर जा रहा था। उसके पीछे वह भी जा रहा था। वह चालाक कुत्ता भी वहीं पर सो गया। उस आदमी ने पीछे देखा, बोला, ''उठो मेरे साथ चलो। मैं तुम्हें घर ले चलता हूँ। वहीं पर तुम्हें रोटी दूँगा। फिर तुम खा लेना। वहीं पर सो जाना। फिर सुबह तुम मेरे साथ खेत पर चलना। वहीं पर से तुम्हें रोटी दूँगा तो तुम खा लेना। वहीं पर सो जाना। फिर शाम को घर लौट आना। फिर सो जाना।''

आदित्य पटैरिया, दूसरी, मड़देवरा, छतरपुर, म. प्र.

कूड़ा निस्तारण

कूड़ा बोला हँस-हँस के
उसने कहा जमादार से
मुझे मत छूना
देखो मच्छर को बुलाऊँगा
मच्छर तुम्हें काटेगा
तब हो जाओगे दाने से माला माल
गाल तुम्हारा हो जाएगा लाल लाल।

गर्वित, फैज़ाबाद, उ.प्र.

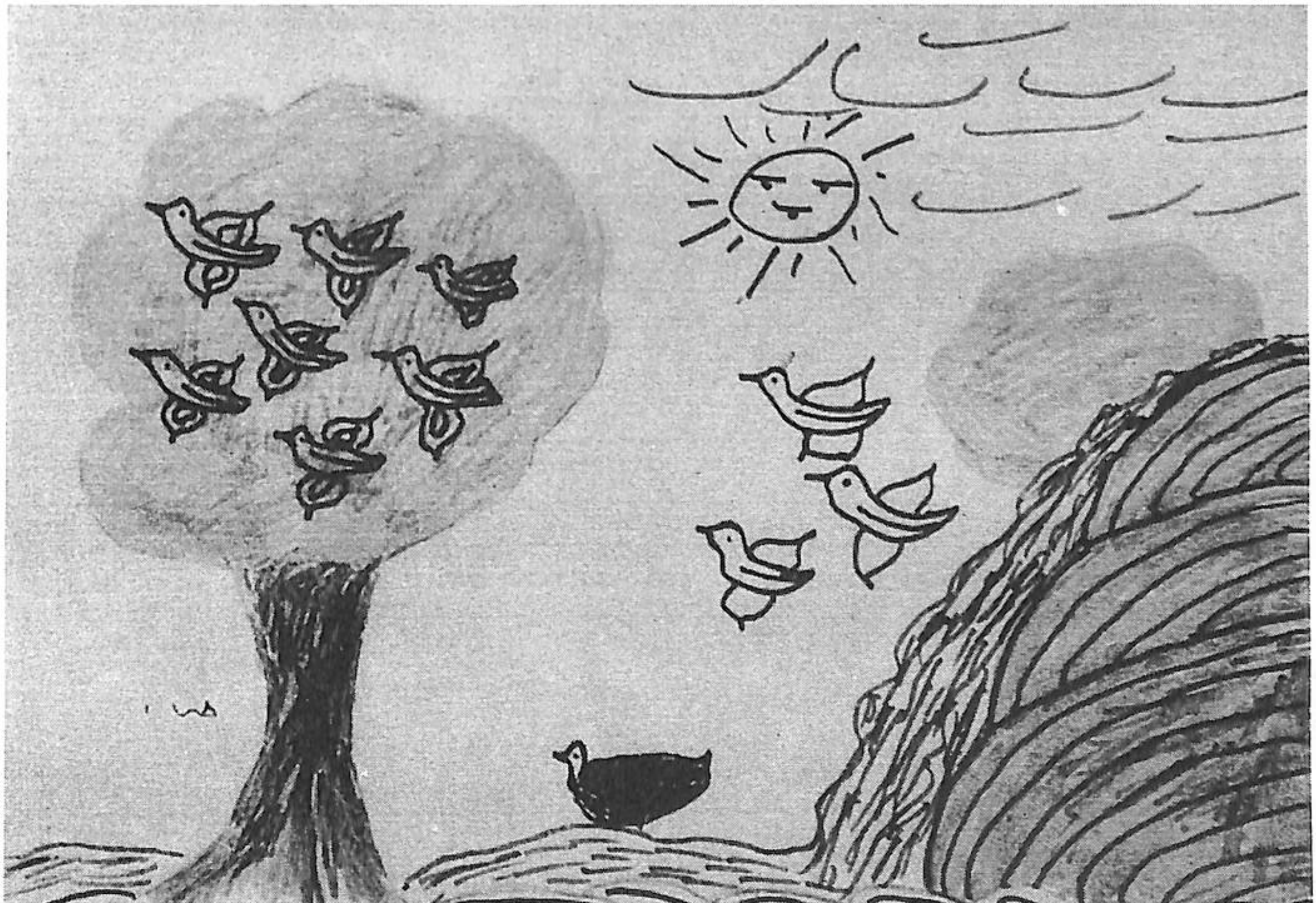

रोशनी व्याम, छठी, भोपाल, म.प्र.

पहाड़ी घूमने गए

एक बार मेरे स्कूल वाले सभी दोस्त और हमारे टीचर ने बोला कि वीरम यहाँ से जो पहाड़ी दिख रही है उस पर अपन एक बार घूमने चलें। मैंने कहा कल। आज सब बच्चों को बता दूँगा। कल अपन चलेंगे। दूसरे दिन हम सब बच्चों एवं टीचर सहित पहाड़ी घूमने गये। हमने नास्ता लिया। पहाड़ी पर जाकर हमने शेर की गुफा देखी और उसमें हमने पैसे डाले और फिर हम नीचे उतरने लगे। इतने में एक लड़की को बिच्छू ने काट खाया। हमने उस लड़की को वहीं एक दवा लगा दी। हम नीचे उतरे। इसके बाद हमने नास्ता किया और फिर हम घर आ रहे थे तो रास्ते में हमको बेर के पेड़ दिखे। हम और हमारे टीचर इसके बाद फिर वापस स्कूल पे लौटे। और फिर वहाँ पर देखा तरह-तरह के पेड़ एवं तरह-तरह की घास और बहुत चीजें देखीं। हमें बहुत मजा आया।

वीरम चौहान, आठवीं, पलासी, देवास, म.प्र.

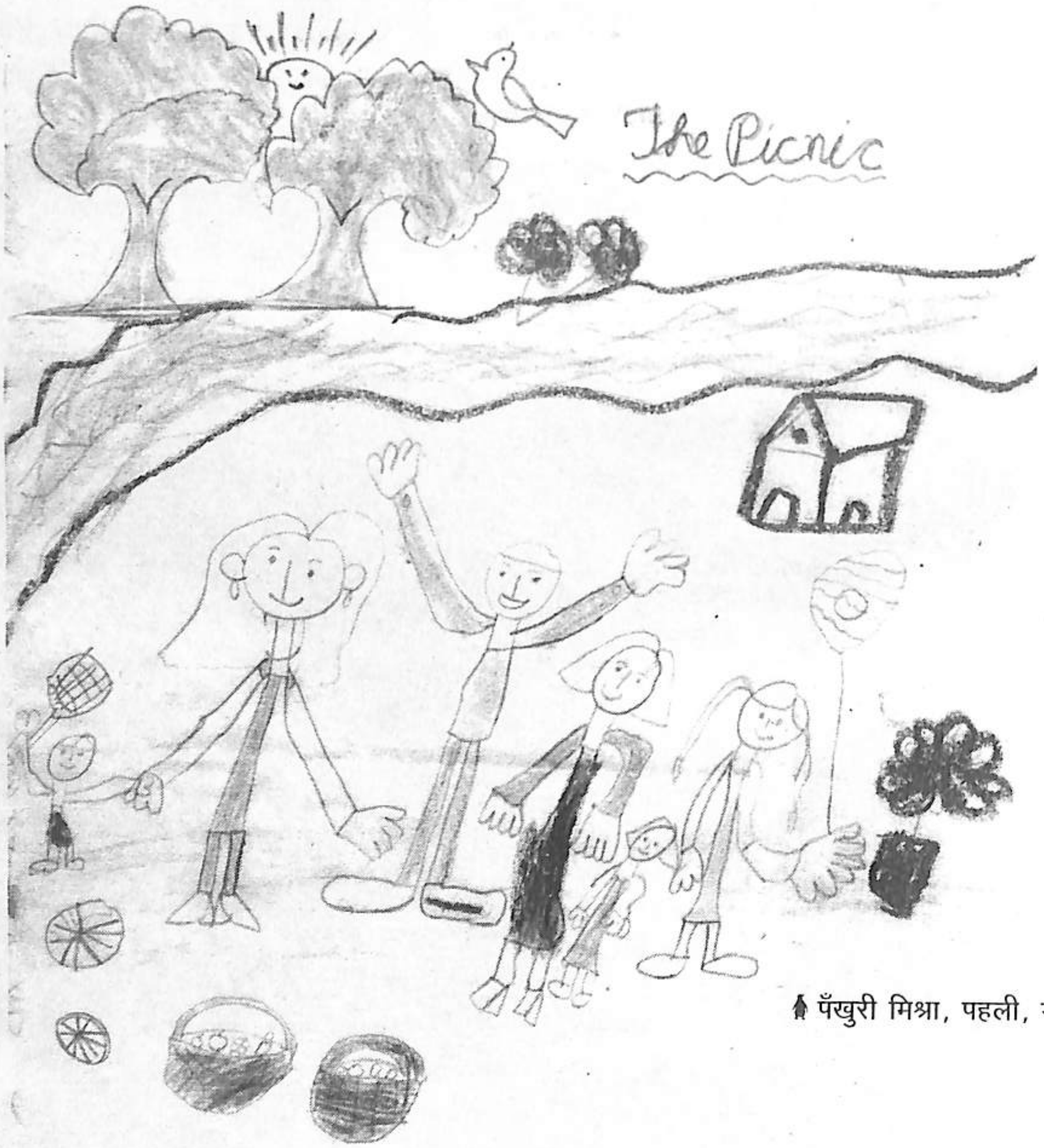

पँखुरी मिश्रा, पहली, महू, म.प्र.

मेरी बिल्ली

मेरी बिल्ली ने दो बच्चे दिये। एक लड़का और एक लड़की। लड़के का नाम ब्राऊनी, लड़की का नाम सनो। वह दोनों बहुत प्यारे हैं। जब भी मैं उनको खाना देती वो मेरे पैर काटते। अगर मैं वहाँ काम से जाती तो वो मेरे पैर से खेलते हैं। सनो बहुत कमज़ोर हो गई थी। और वो मर गई। मेरे भैया ने गड्ढा खोदा और उसे गाड़ दिया। अब ब्राऊनी के साथ ज़्यादा मज़ा नहीं आता, लेकिन उसकी माँ के साथ बहुत मज़ा आता है। ब्राऊनी को मेरी गुड़िया के साथ बड़ा मज़ा आता है। मुझे बिल्ली के बच्चे बहुत पसंद हैं।

तारा रस्तोगी, भीमताल, नैनीताल, उ.प्र.

तोशीप सोनकुसरे, पहली, उज्जैन, म.प्र.

एक तोता और बिल्ली

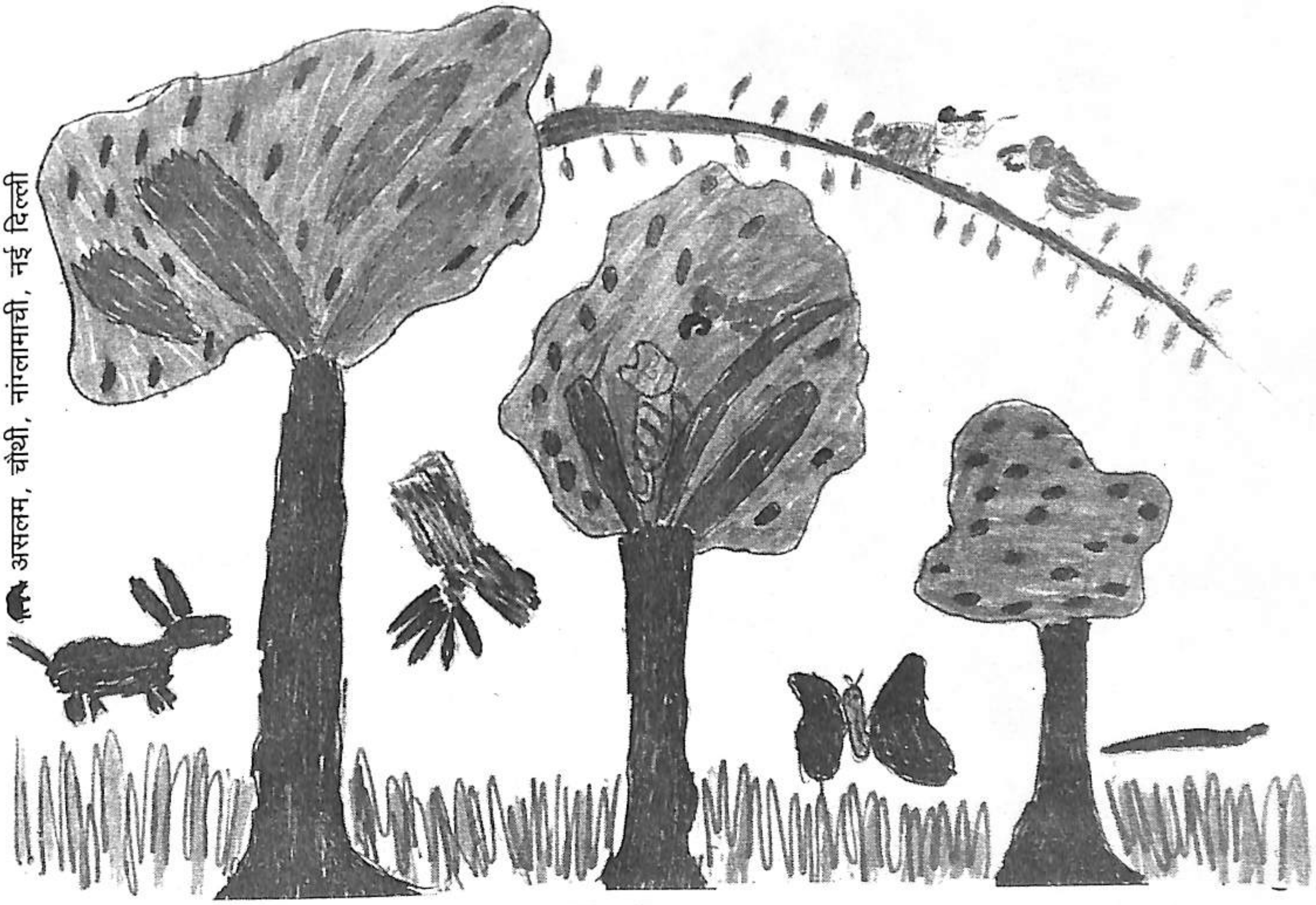

असलम, चौथी, नांगलामाची, नई दिल्ली

कार

कार, मेरी प्यारी कार,
उठाती हम सब का भार।
करते हम उसकी जय-जयकार।
पर न करती हमसे बात।
मन करता पटक दें उसको,
पर पापा, मम्मी ऐसा करते वार।
हो जाती सारी मेहनत बेकार,
कार मेरी प्यारी कार।

देवास मिश्रा, तीसरी, फैज़ाबाद, उ.प्र.

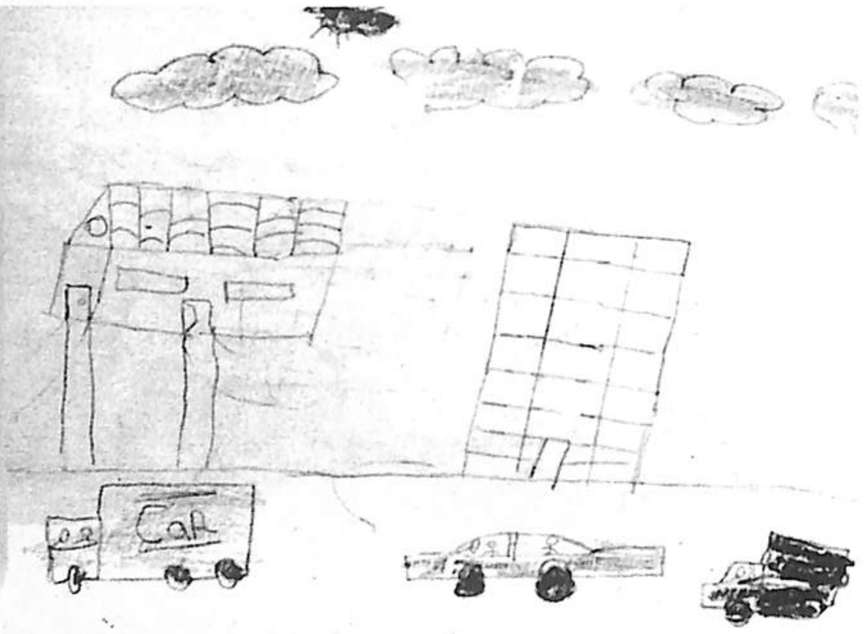

यश चावला, तीसरी, भोपाल, म.प्र.

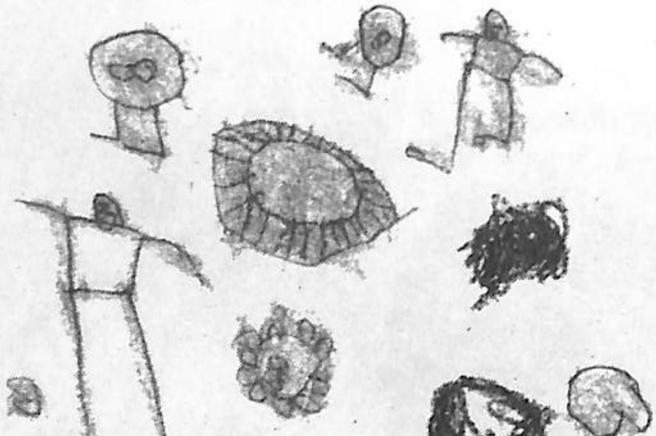

कंवलाझा, खातेगाँव, देवास, म.प्र.

प्राचीन समय की बात है। किसी मोहल्ले में मेरे घर के पीछे एक खजूर का झाड़ था। वह बहुत ही पुराना था। वह इतना बड़ा एवं पतला था कि हवा के एक झोंके से हिलने लगता था। उससे कई खजूर टपकते थे। वह झाड़ पूरे मोहल्ले में प्रसिद्ध था। उसका कोई भरोसा नहीं था। वह कभी भी गिर सकता था। जिस का वह झाड़ था, उससे कई बार झाड़ कटवाने को भी कहा। लेकिन वह कहता नहीं टूटेगा। एक रात, लगभग 9-10 बजे के बीच की बात है। वह झाड़ घर पर गिर गया। और मेरे नानू को लगते-लगते बची। मेरी मौसी और मैं, हम दोनों बीमार थे। मेरी बड़ी मौसी ड्यूटी से आई, तब उन्होंने देखा। तो वह रोने लगीं। तब जिन अंकल का वह झाड़ था, उनसे जब कहा तो वह कहने लगे कि मैं क्या करूँ! घर आपका गिरा है। रहते आप हैं। मैं क्या करूँ।

अंकिता खेरिया, नवमी, भेरूगढ़, देवास, म.प्र.

समस्या

मध्यप्रदेश के देवास जिले के बालगढ़ गाँव में पानी की बहुत बड़ी समस्या है। वहाँ पर एक-एक बूँद पानी के लिए तीन किलोमीटर दूर जाना पड़ता है। क्योंकि आसपास दूर तक कोई दूसरा साधन नहीं है। हमें वहाँ पर पानी की बहुत ज़्यादा कमी महसूस होती है। हालाँकि अभी-अभी वहाँ पर एक तालाब खुदवाया गया था। लेकिन दो साल से बारिश कम होने के कारण तालाब का पानी सूख जाता है। पानी की समस्या को लेकर कई बार वहाँ के पार्षद को कुछ करने को कहा गया लेकिन उनके ऐसे हाल हैं कि वो इस कान से सुनते हैं और उस कान से निकाल देते हैं। यहाँ पर किसी भी चीज़ के लिए पर्याप्त पानी नहीं है। और जिन लोगों के यहाँ बोरिंग है वे लोग पानी बेचते हैं। जो लोग बेरोजगारी से पीड़ित हैं वे लोग घर का सामान लें या पानी खरीदें। अगर ऐसे ही चलता रहा तो एक दिन बालगढ़ में लोग पानी से ही मरने लगेंगे।

विनोद वर्मा, नवमीं, बालगढ़, म.प्र.

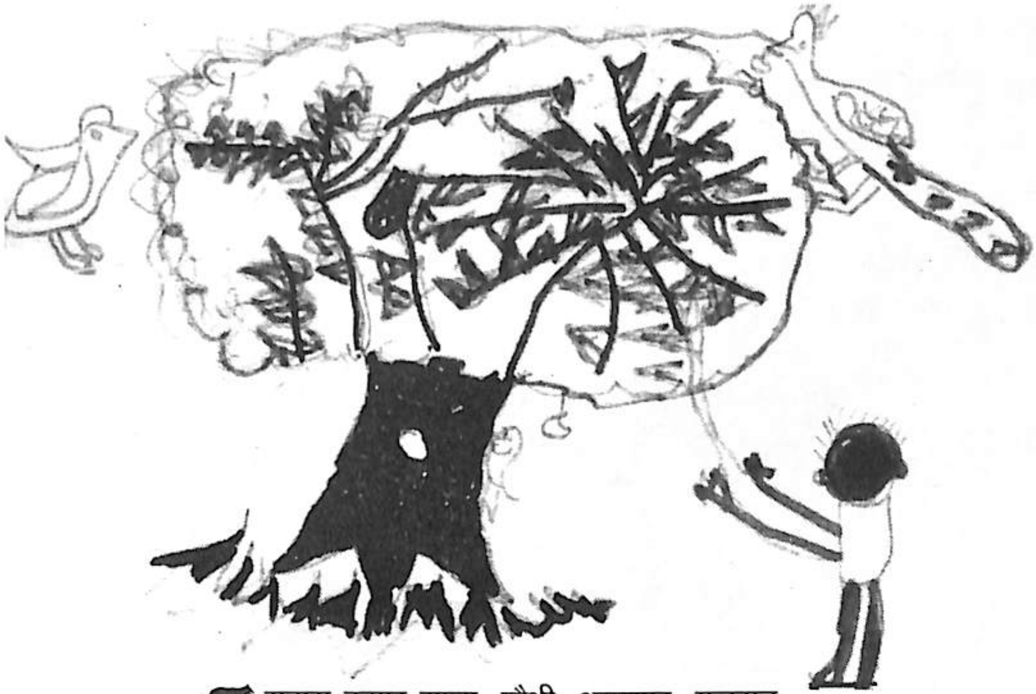

सुहास कुमार झाला, चौथी, अमरापुर, गुजरात

मेरी डायरी का एक पन्ना

आज सुबह स्कूल गया। आज सुबह बहुत आलस हो रहा था और पापा मुझे उठा रहे थे। पापा ने मेरा हाथ पकड़कर उठाया और मेरे हाथ में चोट लग रही थी। आज ज़्यादा काम नहीं हुआ। ट्यूशन पढ़ने गया। गणित और अँग्रेज़ी पढ़ा। क्रिकेट खेला। आज हमारा लाइब्रेरी का पीरियड था। मैंने The cap seller and the other stories वाली बुक इशु कराई। इसमें 15 मज़ेदार कहानियाँ हैं। आज सुबह जब स्कूल जा रहा था, तो सोचा बाबाजी के पैर छू लूँ। लेकिन उनके पैर रजाई के अंदर थे। मैंने कहा - बाबाजी आपके पैर कहाँ हैं? फिर मैंने रजाई के अंदर हाथ डाला तो बाबाजी हँसने लगे। (5 फरवरी 2001, सोमवार)

शिवांक, दिल्ली

आलसी बंदर

एक आलसी बंदर था। वह कोई काम नहीं करता था। जब उसको भूख लगती तब वह भोजन की तलाश में इधर-उधर भटकता। उसे फल मिलते तब वह फल खाकर फिर सो जाता। एक बार एक जंगल से कोई बंदर आ गया और वो बंदर को परेशान करने लगा। फिर बंदर वहाँ से चला गया। और दूसरी जगह अपना बसेरा बना लिया। एक बार बंदर भूख के मारे इधर-उधर भटकता रहा। उसको खाने के लिए कोई भी चीज़ नहीं मिली। वह भूखा ही सो गया। एक बार वह पेड़ से नीचे गिर गया। उसे बहुत चोट आई। अब वह क्या करे। कोई भी उसकी मदद नहीं करना चाहता था। क्योंकि वह आलसी के साथ बहुत घमंडी था। जब वह बहुत तेज़ से चीखा-चिल्लाया तब एक बंदरिया वहाँ पर आई और बंदर की मदद करी। फिर बंदर बोला कि तुम्हारे पास खाने के लिए कुछ फल हैं। अगर हैं तो क्या तुम मुझे दे सकती हो। बंदरिया बोली, "क्यों तुम्हारे पास खाने के लिए कुछ नहीं है क्या।" बंदर बोला, "नहीं मैं खाने की तलाश में इधर-उधर जा रहा था। तभी तो पेड़ से नीचे गिर गया। और मुझे बहुत चोट आई।" "अच्छा तुम रुको। मैं कहीं से फल लाती हूँ।" बंदरिया फल की तलाश में चली गई। बंदरिया कुछ फल लेकर आई और बोली, "तुम आलसी बंदर हो ना।" उसने कहा, "तुम्हें कैसे पता।" बंदरिया बोली, "जहाँ मैं रहती हूँ वहाँ के सभी जानवर तुम्हारी ही बातें करते रहते हैं। इसलिए तुम आलस मत करा करो। आलस करने से तुम आलसी बंदर कहलाते हो।" बंदरिया की बातें सुनकर बंदर ने बंदरिया से कहा, "अब मैं आलस नहीं करूँगा।"

प्रीति भगौरिया, आठवीं, भोपाल, म. प्र.

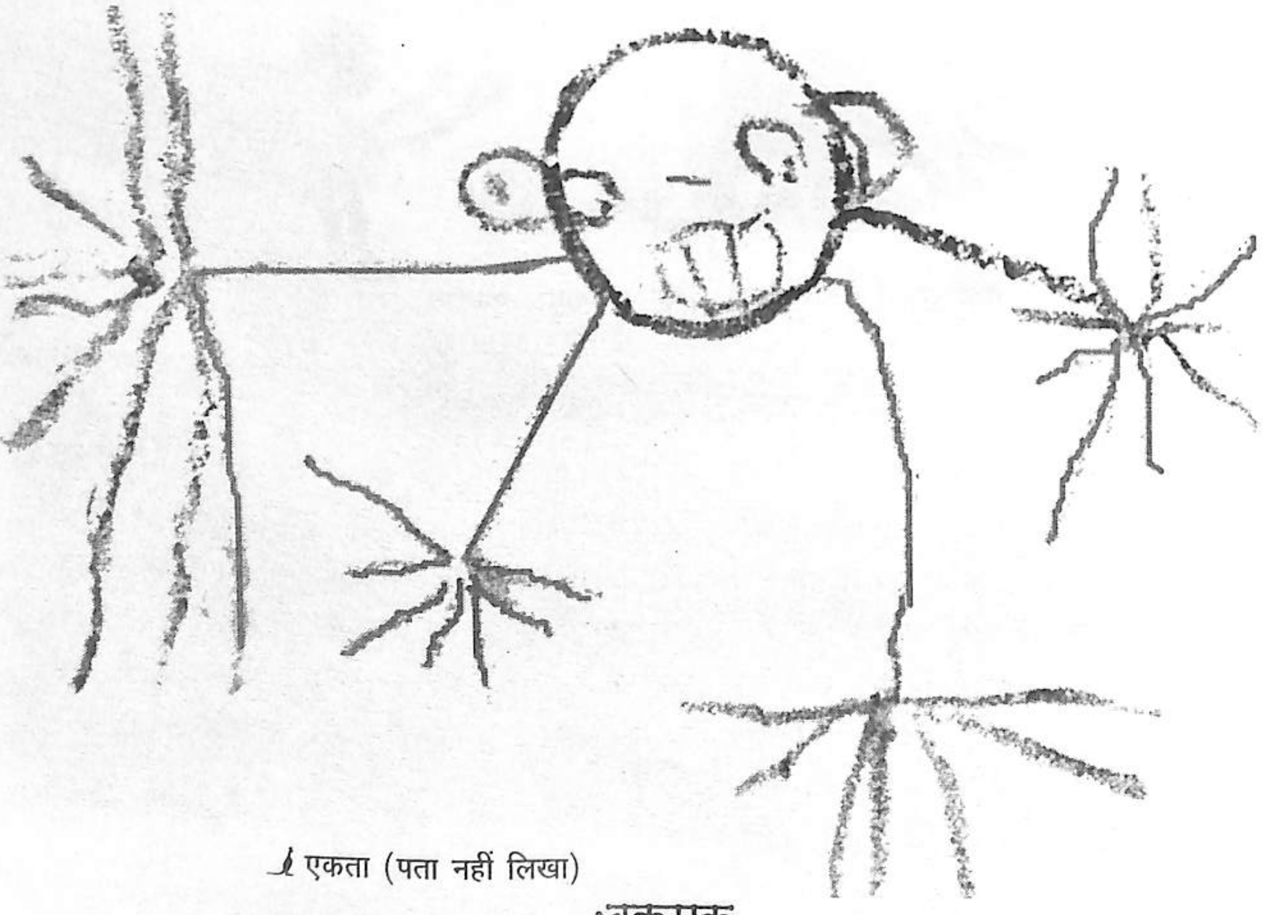

एकता (पता नहीं लिखा)

जब बच्चे थे पापा-मम्मी

ऐसे भी दिन हुए हैं जब मम्मी-पापा वच्चे हुआ करते थे तुम्हारी तरह! तुम्हारी तरह उन्हें भी डाँट पड़ती होगी। धमाचौकड़ी वे भी मचाते होंगे। वे भी तुम्हारी तरह उदास और खुश हुआ करते होंगे। क्या मम्मी-पापा को वे दिन आज भी याद होंगे?

इस कॉलम में तुम सबके "मम्मी-पापा" के लिए एक मौका है उनके बचपन को याद करने का। उनसे कहना वे ज़रूर लिखें। अगर वे न लिखें तो उनसे सुनकर तुम्हीं लिख भेजना। हाँ, दादा-दादी, नाना-नानी के किस्से भी हो सकते हैं।

इस बार *की शरारत लिख रही हैं नन्हीं वीहू की मम्मी अंजना त्रिवेदी।*

कथा गुजिया बनाने की...

मैं तब आठवीं में पढ़ती थी। इंदौर के राजबाड़ा में हमारे घर एक मंदिर है। हर तीज-त्यौहार पर भगवान को भोग लगाने के लिए पकवान बनाए जाते थे। माँ सुबह से ही तैयारी करती थीं। मैं और मेरी बड़ी बहिन उनकी मदद किया करते। ऐसे ही एक मौके पर माँ ने गुजिया बनाने की तैयारी की। सुबह से ही हम दोनों बहनें और हमारा छोटा भाई काम में लगे हुए थे। गुजिया बनाने की पूरी प्रक्रिया पर हम नज़र रखे हुए थे। पूजा-पाठ खत्म हुआ। दोपहर में जब सब खा पीकर सो गए। तब पहले से ही बनाई हुई योजना के तहत मैं और मेरा छोटा भाई उठकर रसोई में आए। चुपचाप गैस जलाई। कड़ाही चढ़ाई और उसमें डिब्बे से घी उड़ेल दिया। घी शायद कुछ ज़्यादा ही गिर गया था। पर हमारा इरादा था कि गुजिया सेंकने के बाद घी को फिर डिब्बे में डाल देंगे। जब तक घी गरम हो, हम दोनों गुजिया बनाने में जुट गए। आटा गुँथा हुआ रखा था। मसाला भरना शुरू किया। हम जितना आसान समझ रहे थे काम उतना आसान था नहीं। जैसे ही हम मसाला भरकर उसे लपेटते वह कहीं न कहीं से झाँकने लगता। हम दोनों ही एक से बढ़कर एक थे। कभी वो आज़माता, कभी मैं। और गुजिया थी कि बन ही नहीं रही थी। हम यह भी कोशिश कर रहे थे कि इन सब कामों में आवाज़ न हो। पापा का डर तो कम था, पर मम्मी तो मारे बिना नहीं छोड़ेंगी। इस सबके चक्कर में हम भूल गए कि चूल्हे पर कड़ाही चढ़ी है। जब घी खूब तपकर जलने लगा तो कड़ाही में आग लग गई। ऊँची-ऊँची लपटें उठने लगीं। हम दोनों घबरा गए। हमें लगा अब तो पूरा घर ही जल जाएगा। हम चिल्ला भी नहीं पा रहे थे। पूरी रसोई में धुआँ ही धुआँ हो रहा था। किसी तरह भाई ने गैस बन्द की। कड़ाही में घी अब भी जल रहा था। भाई ने एक पुराना कपड़ा उठाकर कड़ाही ढँक दी। आग अब बुझ चुकी थी। कड़ाही बिल्कुल काली हो गई थी। जल्दी-जल्दी सारा सामान समेटा। कड़ाही अच्छी तरह रगड़कर माँजी। पर रसोई में भरे हुए धुएँ का हम कुछ नहीं कर पाए। सफाई करके हम फिर अपनी-अपनी जगह दुबक गए। जब माँ उठीं और रसोई में आईं तब उन्हें पूरा माजरा समझ में आया। पूछताछ हुई तो हमने सारी बात सच-सच बता दी। माँ ने थोड़ा डाँटा और फिर समझाया। कहने लगीं- अगर कहीं जल जाते तो! इसके बाद माँ जब भी कुछ बनातीं तो हमें भी बताती जातीं। और अपने साथ काम में लगाए रखतीं ताकि मैं खुद करके देख सकूँ। आज जब भी वो लपटें याद आती हैं तो बहुत डर लगता है।

✳ *चित्र -संतोष श्रीवास्तव*

युद्ध

मुम्बई की एक बड़ी बिल्डिंग। सैंकड़ों परिवारों का रहवास। एक दिन वहाँ कुहराम मच गया। देखें क्यों। बता रहे हैं - *आमोद कारखानिस*

लग रहा था किसी ने युद्ध की घोषणा कर दी हो। लोग अपने घरों से निकल-निकलकर पिछवाड़े में इकट्ठे हो रहे थे। लाठी, हॉकी, क्रिकेट का बल्ला, पत्थर, बेलन - जो हाथ लगा उसी से लैस। पिछवाड़ा किसी युद्ध-फिल्म का सीन लग रहा था। पहली पंक्ति भीषण जंग में लगी, ज़बरदस्त पत्थरबाज़ी कर रही थी। दूसरी टुकड़ी इधर-उधर दौड़ती-भागती पत्थरों को बटोरने में लगी थी। जल्द ही एक कोने में पत्थरों का बड़ा-सा ढेर लग गया था। लग रहा था जैसे दुश्मन इस भारी पत्थरबाज़ी से घिर चुका था - हो सकता है घायल हो, पर था जीवित।

अगला कदम क्या हो? नई तरकीब सोची जा रही थी।

"हमें किसी भी तरह उसे कोने से निकलने पर मजबूर करना होगा।"

"एक बार बाहर निकल आया तो हम डंडियों से उसका काम तमाम कर सकते हैं।"

"एक काम करो। तुम दूसरे सिरे पर जाकर हल्ला करो। पत्थर भी फेंको। हम इस ओर होंगे। निकला तो ख़त्म कर देंगे।"

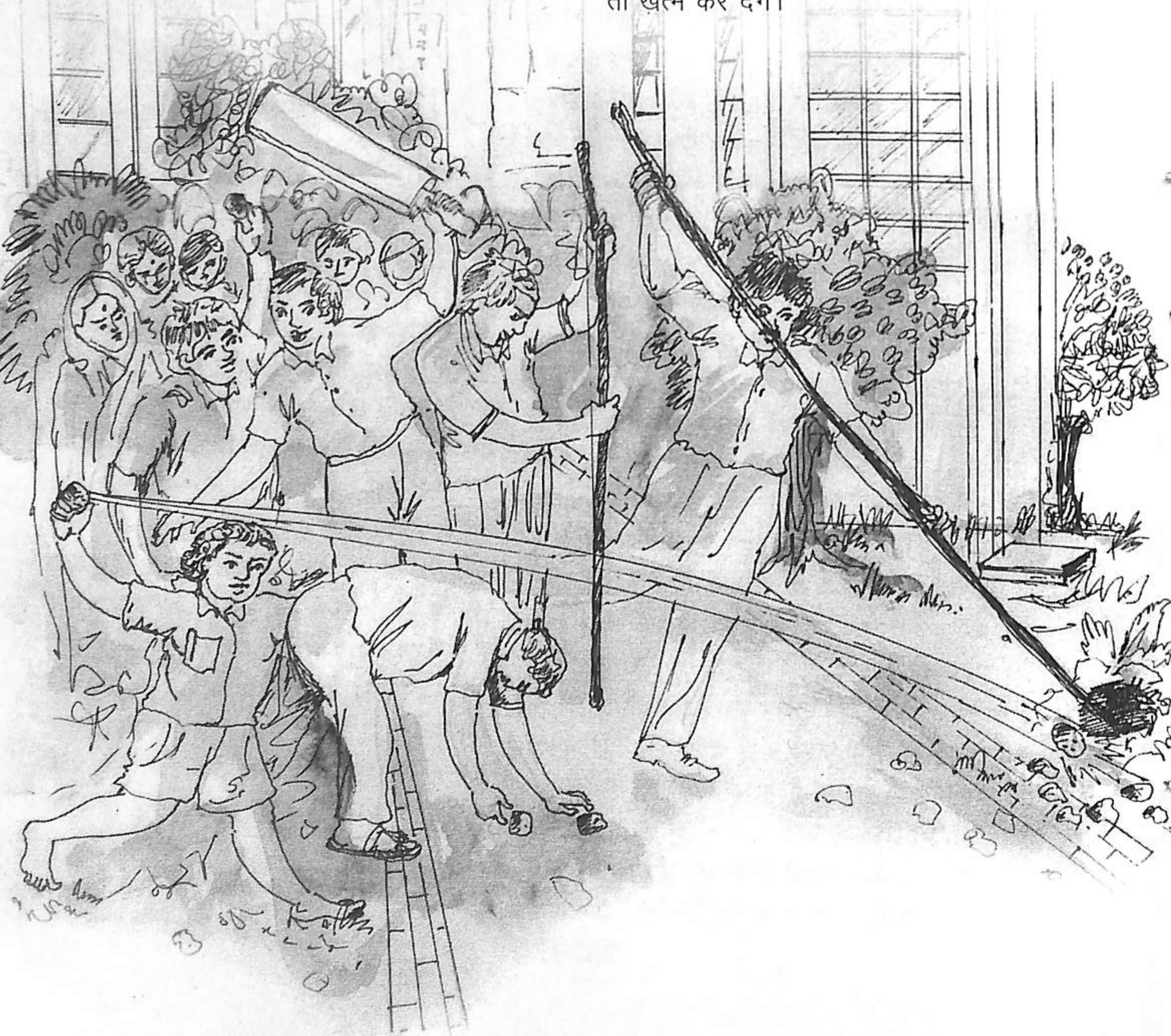

"मैं? वहाँ जाऊँ! सवाल ही नहीं उठता। अगर वो पलट कर मुझी पर वार कर दे तो! वे बहुत चालाक होते हैं। और चेहरे भी याद रखते हैं।"

"चलो एक ओर से पानी डालना शुरू करते हैं। डूबने लगेगा तो खुद ही बाहर आ जाएगा।"

"लेकिन पानी कहाँ है? अगर तुम सरकारी नल से पानी लाने वाले हो तो पहले मुझे बता देना। काफी सारे कपड़े धोने हैं। मैं उसी पानी से धो लूँगी।"

"यहाँ इतनी आफत आई हुई है। और तुम्हें कपड़ों की सूझ रही है।"

मैं वहाँ से गुज़र रहा था। इस सारी अफरा-तफरी ने मेरा ध्यान खींचा। क्या हो सकता है? कोई खतरनाक जानवर - गोह, साँप, बिच्छु या कुछ और। क्या छुपा बैठा होगा? मैं माज़रा जानने घटना स्थल पर पहुँचा।

"अजगर है, भाईसाहब।"

"10 मीटर से भी लम्बा।"

"नहीं भाई, अजगर नहीं, नाग है।"

"काला और विशाल। वो एक छोटे बच्चे को भी आसानी से निगल जाता है।"

यह सब सुनकर मैंने अपने साँप विशेषज्ञ दोस्त को बुला भेजा। मैंने कहा कि साँप को मारने का कोई कारण ही नहीं बनता। उसे पकड़कर दूर कहीं सुरक्षित जगह पर छोड़ देते हैं। हमने जमा हो चुके पत्थर आदि को धीरे-धीरे उठाया। वहाँ कोने में दुबका बैठा था डरा सहमा-सा 'धामन' (रैट स्नेक)।

मेरे दोस्त ने साँप पकड़ने की चिमटी से उसे बाहर खींचा। हाथ में उठाया। भीड़ को दिखाया। यह पूरी तरह से विषहीन साँप है। सिर्फ चूहे खाता है। चूहों को खाकर एक तरह से हमारी सहायता ही करता है।

मेरा दोस्त तो उसे वहीं छोड़ देना चाहता था। किसी को नुकसान तो पहुँचाएगा नहीं, ऊपर से चूहे खाकर फायदा ही पहुँचाएगा। लेकिन इस सह-जीवन के लिए सोसाइटी के लोगों की तैयारी न दिखी। तो हमने उसे झोले में डाला और पास के जंगल में छोड़ दिया।

यूँ हुआ एक 'युद्ध' का अंत।

* *चित्र - अशोक चंचल*

ओले

ओले यानी बारिश के साथ गिरती बर्फ की गोलियाँ। ओले हर बारिश के साथ नही गिरते। आम तौर पर ये फरवरी-मार्च की कभी-कभार की बारिश के साथ ही आते हैं। तुमने हाल ही में उत्तर भारत के कई हिस्सों में गिरे ओलों के बारे में पढ़ा होगा। मार्च-अप्रैल ही गेहूँ की फसल के पकने के महीने होते हैं और ओलों का आना भी इसी वक्त होता है। इसलिए ओले किसानों के लिए मुसीबत बनकर आते हैं।

मॉनसून की छमाछम बारिश के साथ ओलों का आना न के बराबर होता है। दरअसल ओलों के बनने के लिए कुछ खास तैयारियों की ज़रूरत होती है। इनका बनना भी कम दिलचस्प नहीं।

ओलों के बारे में...

अचानक लगभग 30,000 फीट की ऊँचाई से और 120 मील प्रति घंटे की रफ्तार से गिरे बर्फ के इन गोलों से ज़्यादातर नुकसान तो फसलों और सम्पत्ति का ही होता है। लेकिन 30 अप्रैल 1888 में मुरादाबाद में हुई ओलावृष्टि में 246 लोग मारे गए। 1600 भेड़ व बकरियाँ भी मारी गईं। क्रिकेट की बॉल के आकार के ये औले भारत में दर्ज अब तक के सबसे गम्भीर माने जाते हैं।

आमतौर पर ओले मटर या कभी-कभी अंगूर के दाने बराबर होते हैं। लेकिन 3 सितम्बर 1970 को केंसास में गिरे ओलों का व्यास 5.6 इंच से भी ज़्यादा था। और भार था लगभग 1 किलोग्राम। भारत में सबसे बड़े ओले उत्तर-पूर्व में गिरते हैं।

ओलों को काटने पर गोल-गोल धारियाँ दिखेंगी। प्याज़ सरीखी। पेड़ के तने पर बनी परतों सरीखी। जितनी बार बूँद हवाओं के साथ ऊपर नीचे हुई होगी उतनी ही धारियाँ दिखेंगी।

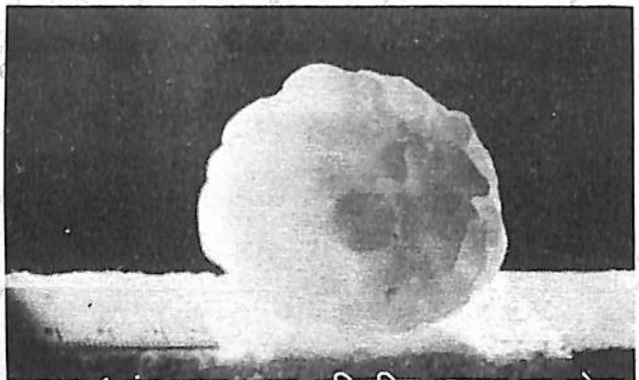

लगभग 4 इंच व्यास वाला अनियमित आकार का ओला

ओले ज़्यादातर दोपहर के वक्त गिरते हैं।

एक अनुमान के मुताबिक ओलों से हर साल 1 अरब डॉलर की फसल तबाह हो जाती है। मई 1995 में अमरीका में गिरे ओलों से लगभग 2 अरब डॉलर का नुकसान हुआ। यह अब तक का ओलों द्वारा किया सबसे भारी नुकसान माना जाता है।

तूफान और ओले

पृथ्वी के ऊपर हज़ारों किलोमीटर तक फैली हवाएँ जब कई हफ्ते एक ही जगह बिताती हैं तो उनका तापमान एक बराबर हो जाता है। लेकिन जब इन हवाओं की अलग-अलग परतों के तापमान में फर्क आता है तो भारी उथल-पुथल मच जाती है। जब सूरज की गर्मी से गर्म हुई ज़मीन की तपन से इन हवाओं की निचली परत गरम व नम (वाष्प सहित) हो जाती है और ऊपरी परत ठण्डी रहती है तो हवा अस्थिर हो जाती है। इस अस्थिर हवा को ऊपर की ओर उछाल मिलने पर वह ऊपर की ओर बढ़ती जाती है। आसपास के वातावरण से ज़्यादा गरम होने के कारण ये फैल जाती हैं और लगातार ऊपर बढ़ती जाती हैं।

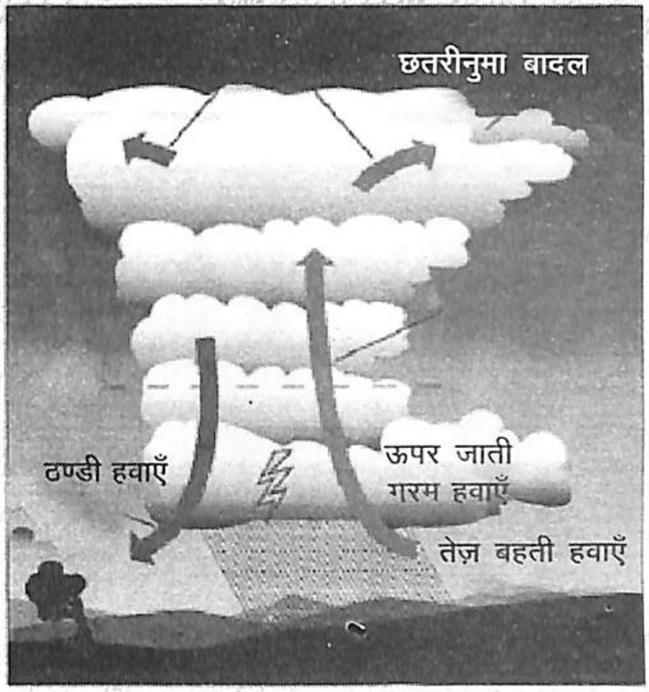

इन हवाओं की वाष्प के संघनन से छतरीनुमा बादल बन जाते हैं। संघनन से ऊर्जा छूटती है। इससे हवाएँ और ज़्यादा गरम हो जाती हैं और ऊपर जाने लगती हैं। तूफान में यह प्रक्रिया लगातार चलती रहती है। इसीलिए निचली परतों की वाष्प पर तूफान की ऊर्जा टिकी रहती है। यह तूफान का ईंधन है।

- संघनन से गरम होती हवा 8 से 12 मील की ऊँचाई तक पहुँच जाती है। यहाँ तापमान बहुत ही कम होता है। गरम हवाओं के साथ आई पानी की बूँदें यहाँ आकर बर्फ के रूप में जम जाती हैं। यहाँ से ठण्डी हवाएँ नीचे की ओर जाती हैं ।
- ठण्डी हवाओं में फँसी जमी बूँद नीचे गिरने लगती है। कुछ नीचे आने पर वो कुछ गलने-पिघलने लगती है।

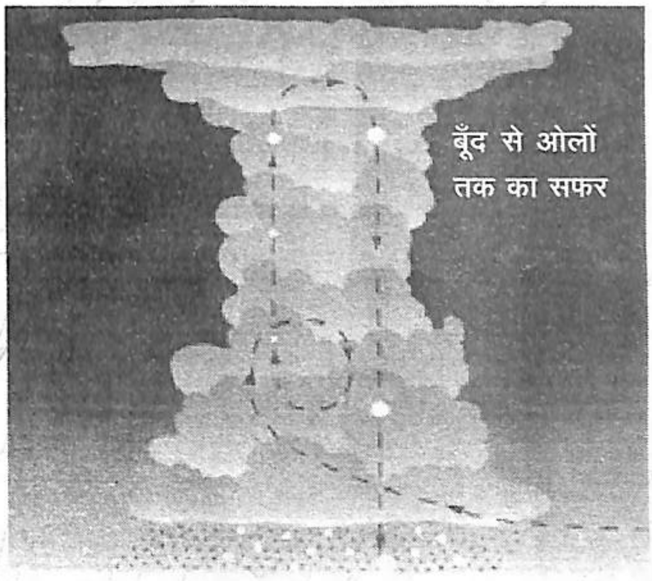

- लेकिन अक्सर यह अधपिघली सी बूँद फिर से ऊपर जाती हवाओं पर लदकर फिर ऊपर ठण्डी जगह पर पहुँच जाती है। यहाँ यह फिर से जमती है। ऐसा कई बार हो सकता है। हर बार इसपर बर्फ की एक नई परत का लेप लग जाता है।
- अंत में भारी होती गई यह बूँद नीचे टपक पड़ती है - ओले के रूप में।

संघनन
सूरज की गर्मी से पानी वाष्प बन जाता है। जब यह वाष्प कम ताप वाले क्षेत्र में पहुँचती है तो यह फिर से पानी में की नन्हीं-नन्हीं बूँदों में बदल जाती है।

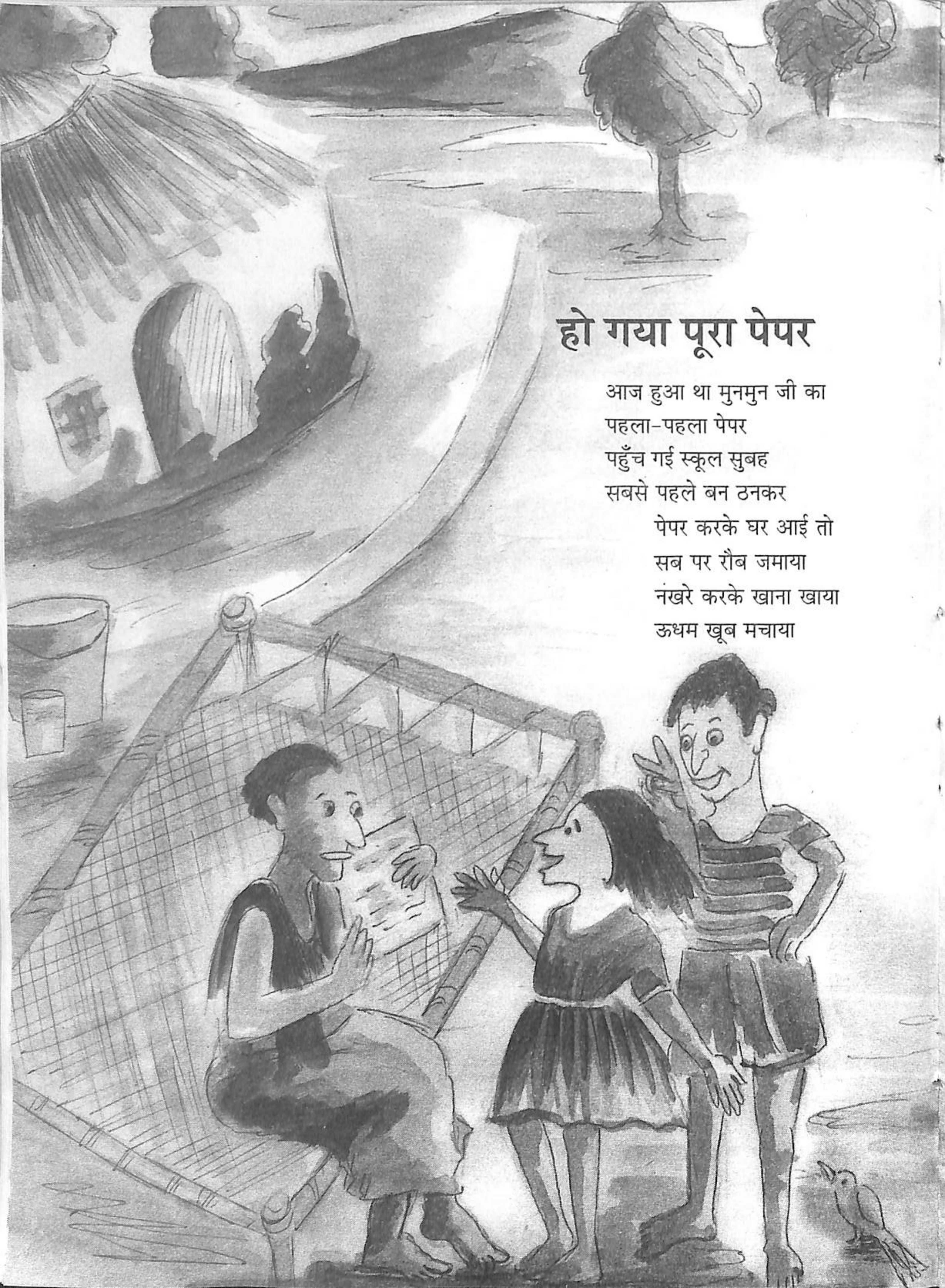

हो गया पूरा पेपर

आज हुआ था मुनमुन जी का
पहला-पहला पेपर
पहुँच गई स्कूल सुबह
सबसे पहले बन ठनकर

पेपर करके घर आई तो
सब पर रौब जमाया
नंखरे करके खाना खाया
ऊधम खूब मचाया

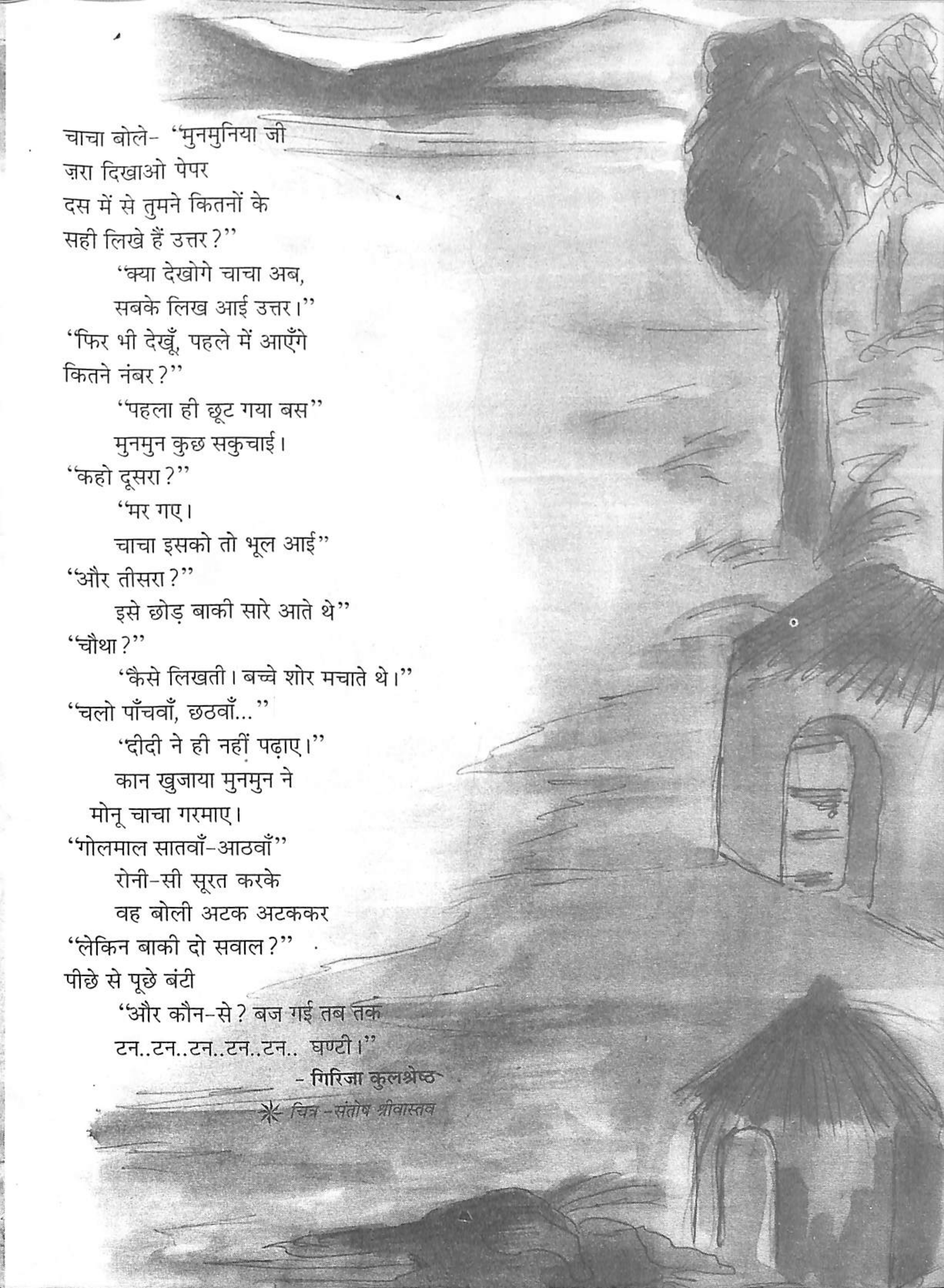

चाचा बोले- "मुनमुनिया जी
ज़रा दिखाओ पेपर
दस में से तुमने कितनों के
सही लिखे हैं उत्तर?"
"क्या देखोगे चाचा अब,
सबके लिख आई उत्तर।"
"फिर भी देखूँ, पहले में आएँगे
कितने नंबर?"
"पहला ही छूट गया बस"
मुनमुन कुछ सकुचाई।
"कहो दूसरा?"
"मर गए।
चाचा इसको तो भूल आई"
"और तीसरा?"
इसे छोड़ बाकी सारे आते थे"
"चौथा?"
"कैसे लिखती। बच्चे शोर मचाते थे।"
"चलो पाँचवाँ, छठवाँ..."
"दीदी ने ही नहीं पढ़ाए।"
कान खुजाया मुनमुन ने
मोनू चाचा गरमाए।
"गोलमाल सातवाँ-आठवाँ"
रोनी-सी सूरत करके
वह बोली अटक अटककर
"लेकिन बाकी दो सवाल?"
पीछे से पूछे बंटी
"और कौन-से? बज गई तब तक
टन..टन..टन..टन..टन.. घण्टी।"

- गिरिजा कुलश्रेष्ठ

चित्र - संतोष श्रीवास्तव

संतुलन : एक आसान कमाल!

अगर हम पूछें कि सीधा खड़े होने के लिए क्या करना पड़ता है। तो तुम बोलोगे क्या अटपटा सवाल है। खड़े होने के लिए खड़ा होना पड़ता है। बस।

लेकिन राय बनाने से पहले दो चीज़ें करके देखो। एक में तुम्हें बिना हिले-डुले सीधा खड़ा होना है। इसमें नीचे दिया चित्र तुम्हारी मदद करेगा।

हिलना नहीं - चित्र के अनुसार पूरा इंतज़ाम कर लो। दीवार पर तुम्हारी और सिर पर रखी नुकीली चीज़ की परछाई बनेगी। अपने दोस्त से कहो कि वह दीवार पर बन रही इस परछाई का निशान लगा ले। जैसे ही तुम हिलोगे परछाई निशान से दूर हो जाएगी। इस से आसानी से पता चलेगा कि तुम कितनी देर बिना हिले खड़े हो सकते हो।

दूसरे में भी खड़ा होना है। लेकिन तकिए या किसी मुलायम चीज़ पर और कुछ इस तरह से।

अब शायद तुम भी सोचने लगे होगे कि इतनी आसानी से किए जाने वाले काम में भी कई पेंच हैं। वाकई यह बड़ा जोड़ तोड़ वाला मामला है। हमें सीधा खड़ा रखने के लिए माँसपेशियों और शरीर के कई अंगों को लगातार जद्दोजहद करनी पड़ती है। इस सबको देखते हुए चार पाँवों वाले वानर का दो पाँवों पर खड़े होने की प्रक्रिया वाकई में अद्‌भुत लगती है। इसके लिए एक ज़बरदस्त संतुलन वाली मशीन ज़रूरी थी।

संतुलन सिर्फ सीधा खड़ा होने के लिए ही ज़रूरी नहीं है। हम कुछ भी काम करें - झुकें, बैठें, मुड़ें, सामान उठाएँ - सभी के लिए संतुलन बनाना ज़रूरी होता है।

दरअसल संतुलन बैठाने में मुश्किल सिर्फ हमारी है। जानवरों का मामला आसान है। चार पाँव हैं, तो कोई समस्या नहीं। एक तिपाया कंगारू है - दो पाँव और एक पूँछ पर टिका। पर वो भी ज़्यादा मुश्किल नहीं। तीन पाँवों वाला स्टूल भी तो होता है न। पर क्या दो पाँवों वाले स्टूल को संतुलित कर सकते हो!

संतुलन क्या है?

हमको संतुलित रखना कोई एक अंग का काम नहीं। यह एक लगातार होने वाली प्रक्रिया है। इसमें मस्तिष्क को शरीर के कई सारे अंगों से संदेश मिलते रहते हैं।

हमारा शरीर संतुलन बैठाने के हैरतअंगेज़ काम लगातार करता है। इतना ज़बरदस्त काम और हमें ज़रा भी सोचना नहीं पड़ता। लेकिन जब संतुलन बैठाने के लिए ज़रूरी सुविधाएँ उपलब्ध नहीं होतीं तब पता चलता है कि यह क्या है। करके देखो-

बिना झुके और हाथों का इस्तेमाल किए बगैर कुर्सी से उठकर दिखाओ।

दीवार से एड़ी छुआते हुए पंजों को छूने की कोशिश करो।

कुर्सी को केवल एक टाँग से उठा कर देखो।

चित्र में दिखाए तरीके से खड़े हो। अपने पैरों को पीछे की ओर करते हुए देखो कि तुम ऐसा कितनी दूर तक कर पाते हो।

जैसे कान की अर्द्ध गोलाकार नालियाँ, भीतरी कान के अंग, माँसपेशियों में खिंचाव पहचानने वाले संवेदी हिस्से, त्वचा में दबाव वाले संवेदी हिस्से और आँखें।

तुमने कभी सोचा है कि आँख बन्द करने के बावजूद हम अपने घुटने, कोहनी या शरीर के किसी भी अंग को इतनी आसानी से और बिल्कुल ठीक जगह पर कैसे छू लेते हैं। यह हमारी पाँच जानी मानी इंद्रियों के कारण नहीं होता। इसका कारण है एक छठी इंद्रिय - किनेस्थेसिस। हमारे सिर, हाथ, पैर और अन्य अंगों की स्थिति के बारे में मस्तिष्क को जानकारी इसी इंद्रिय से मिलती है। ये इंद्रिय शरीर के सभी हिस्सों में फैली रहती है।

मस्तिष्क इन सब संदेशों से हमारे शरीर की स्थिति की एक छवि बनाता है। वह हमारी माँसपेशियों को लगातार संदेश भेजता रहता है कि सिर, हाथ, पाँव को कैसे रखो। जैसे जब तुम एक टाँग पर खड़े होकर अपने जूते के फीते बाँधते हो तो देखो क्या-क्या होता है। तुम्हारा मस्तिष्क हर पल तुम्हारे शरीर की स्थिति की खबर रखता है। वो माँपेशियों को खबर भेजता है कि शरीर का भार पीछे की ओर रखो। ज़्यादा समय तक एक टाँग पर खड़े होने पर उस टाँग की पिण्डली और पैर में दर्द हो सकता है। क्योंकि ऐसी स्थिति में उसे दो टाँगों में खड़े होने की तुलना में ज़्यादा मेहनत करनी होती है।

संतुलन का केन्द्र

हम जब गिरने को होते हैं तो हमारा एक पाँव झट से पीछे की ओर निकल आता है। भागते समय हम आगे की ओर झुक आते हैं। क्यों भला? दरअसल भागते समय हमपर हवा का दबाव पड़ रहा होता है। दूसरी दिशा में झुककर हम शरीर को संतुलित कर रहे होते हैं।

हम जानते हैं कि शरीर के हरेक हिस्से का भार होता है। जब हम दो पैरों पर खड़े होते हैं तो हमारा पूरा भार संतुलित होता है। हमें इसमें पैरों से मदद मिलती है। अचानक चल पड़ने पर जब हम एक टाँग बाहर निकालते हैं तो उस पर अतिरिक्त बल लगता है। संतुलित रहने के लिए हमें अपना कुछ हिस्सा उसकी विपरीत दिशा में ले जाना पड़ता है। यानी शरीर का ऊपरी भाग पीछे ले जाना पड़ता है।

शरीर में एक बिन्दु होता है जिसके आसपास भार संतुलित रहता है। यह बिन्दु हमारे चलने, झुकने बैठने आदि के साथ बदलता रहता है। इसे संतुलन का केन्द्र कहते हैं।

आँखों से संतुलन

संतुलन में आँखों की भी अहम भूमिका है। एक सीधे और संकरे रास्ते से धीरे-धीरे चलाने के लिए माँसपेशियों की जानकारी के अलावा आँखों का होना भी ज़रूरी है। लेकिन अगर तुम फुगड़ी खेल रहे हो, जिसमें संतुलन में जल्दी-जल्दी बदलाव होते हैं, तो संतुलन बैठाने के लिए आँखों या माँसपेशियों से काम नहीं चलेगा। इसके लिए अन्दरूनी कान का होना ज़रूरी है।

बन्द आँखों से संतुलन बैठाना - संतुलन में आँखों की क्या भूमिका है। देखते हैं।

चॉक से ज़मीन पर एक सीधी रेखा खींचो। इसपर चलो। अब दूरबीन को उल्टा करके अपने पैरों को देखो। क्या इस बार सीधी रेखा पर चल पाए।

चित्र में दिखाए तरीके से खड़े हो। एक बार आँख खोलकर और एक बार बन्द कर। क्या हुआ।

अन्दरूनी कान

फुगड़ी खेलने के बाद या यूँ ही गोल-गोल घूमते जाने के बाद क्या होता है? रुकने के बाद भी लगता रहता है कि हम अब भी घूम रहे हैं।

तुमने यह भी महसूस किया होगा कि किसी चलती गाड़ी के अचानक रुक जाने पर हम आगे की ओर झुक जाते हैं। फिर एक आध सेकण्ड में सम्भलकर सीधे बैठ जाते हैं। इसका कारण भी संतुलन ही है। लेकिन इस बार संतुलन का ज़िम्मा माँसपेशियों या आँखों पर नहीं बल्कि कान पर होता है।

हमें संतुलित रखने वाले दो पुर्जे हमारे कान के भीतर छिपे हैं। ये दो अलग-अलग उपकरण हैं। और अलग-अलग तरह की जानकारियों की खोजखबर रखते हैं।

भले ही इन दोनों का आकार और काम एक से नहीं हैं लेकिन इनके काम करने का तरीका एक-सा होता है। जैसे ही इनपर दबाव पड़ता है ये एकदम से चेत जाते हैं।

एक उपकरण ऊपर-नीचे की स्थिति की जानकारी रखता है। इसमें छोटी-छोटी थैलियाँ होती हैं जिनमें द्रव भरा होता है। थैलियों की दीवार पर रोंए होते हैं। थैलियों में रेत के आकार के कण होते हैं। ये कण इन थैलियों के नीचे उसी तरह रहते हैं जैसे पानी में रेत।

पीछे रह जाना - पानी भरा एक गिलास लो। इसमें चॉक पाऊडर जैसी कोई चीज़ डालो जो ऊपर तैरती रहे। गिलास को धीरे-धीरे गोल-गोल घुमाओ। पानी को देखो। वह गिलास की तुलना में धीरे घूमेगा।

अपने सिर को कुछ देर के लिए ज़ोर-ज़ोर से घुमाओ। रुकने पर क्या हुआ?

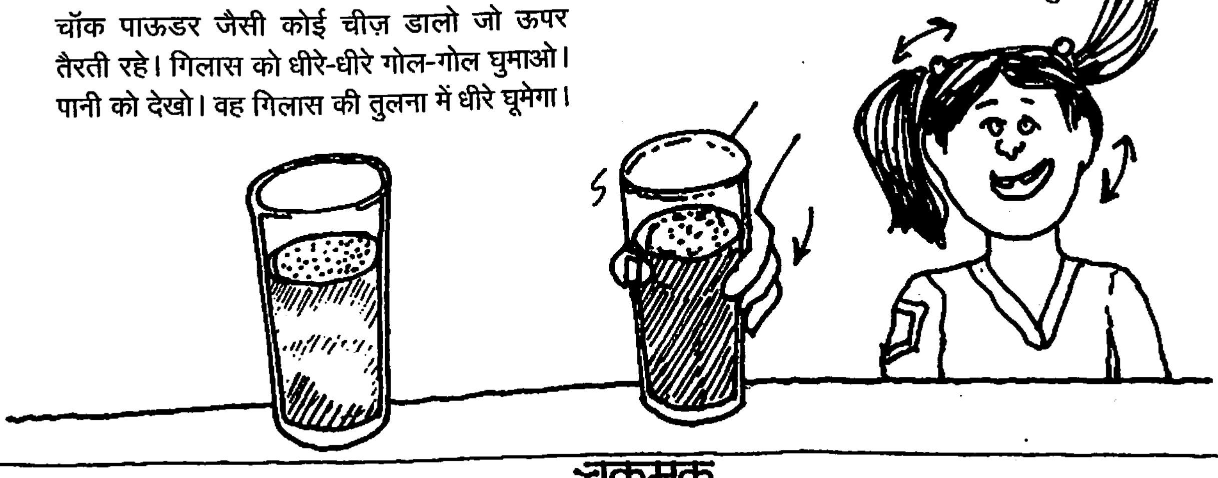

हुआ यूँ कि...

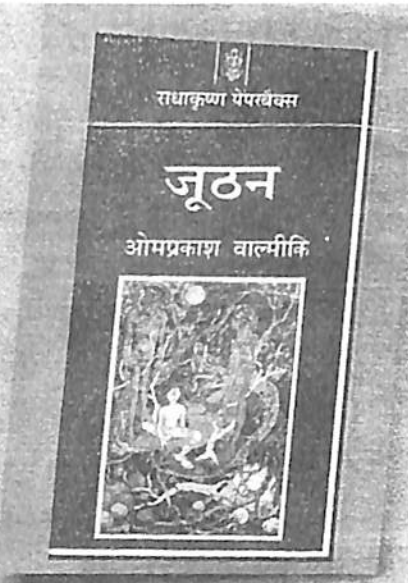

इस बार हम ओमप्रकाश वाल्मीकि द्वारा लिखित 'जूठन' से कुछ अंश दे रहे हैं। यह किताब ओमप्रकाशजी की आत्मकथा है - एक दलित वर्ग के व्यक्ति की आत्मकथा। इसमें लगभग हर घटना, हर विवरण उच्च जाति के बच्चों, शिक्षकों व्यस्कों व बुजुर्गों द्वारा दी गई प्रताड़नाओं से भरा है।

भारतीय समाज में जाति ऐसी प्रताड़नाओं का एक प्रमुख माध्यम बन जाती है। हालाँकि निचली मानी जाने वाली जाति का नाम लेकर प्रताड़ित करना कानूनी रूप से वर्जित है, पर आज भी यह प्रताड़नाओं का एक प्रमुख माध्यम बना हुआ है। इसी तरह माँस खाने, खासकर सुअर का माँस खाने को लेकर कई बार प्रताड़ित किया जाता है। इन पुस्तक अंशों में भी यही झलकता है। यह कितना उचित है और इससे कैसे जूझा जाए, यह भी सोचने का एक विषय है।

हो सकता है कि ऐसी घटनाएँ तुम्हारे साथ या तुम्हारी कक्षा, शाला, गाँव या मोहल्ले में भी घटती हों। कई बार हम खुद भी तो ऐसी घटनाओं में शामिल हो जाते हैं, हँसते हैं, हँसी उड़ाते हैं। उस समय यह अहसास नहीं होता कि जिस पर बीत रही है, उस पर क्या असर होगा?

ये घटनाएँ हमें सोचने पर मजबूर करती हैं कि भारत की आज़ादी के 58 साल बाद भी क्या हमारे देश के हर बच्चे को शिक्षा पाने और जीने की उतनी ही आज़ादी है? ऐसी स्थिति में हम गरीब दलित बच्चों की शिक्षा और जीविका के मौकों को और कैसे सशक्त कर सकते हैं?

छठी कक्षा के रामसिंह, सुक्खन सिंह और मैं फिर एक सेक्शन में आ गए थे। रामसिंह सबसे तेज़ था पढ़ने में। मैं और रामसिंह स्काउट दल में शामिल हो गए थे। ज़िला स्तरीय प्रतियोगिता के लिए स्काउट दल को शहर जाना था। स्कूल से खाकी हाफ पैंट और कमीज़ मिली थी। स्काउट मास्टर रमेशचंद ने वर्दी धोकर इस्तरी करने के लिए कहा था। उस समय तक मैंने कभी इस्तरी किया हुआ कपड़ा नहीं पहना थे। त्यागी लड़कों के कलफ लगे, ताज़ा धुले कपड़ों को देखकर मैं हमेशा सोचता था कि मैं भी ऐसे ही कपड़े पहनकर स्कूल जाऊँ। कभी-कभी तो त्यागियों के घर से मिली उतरन पहननी पड़ती थी। उन कपड़ों को देखकर लड़के चिढ़ाते थे। लेकिन यह उतरन भी हमारी बेबसी को ढक नहीं पाती थी।

खाकी वर्दी को मैंने खूब रगड़-रगड़कर धोया था। समस्या थी इस्तरी करने की। मेरी कक्षा में एक धोबी का लड़का था। मैंने उससे कहा। उसने शाम को घर आने के लिए कहा। शाम को वर्दी लेकर मैं उसके घर गया। मुझे देखते ही उसका बाप चिल्लाया, "अबे, चूहड़े को किंघे घुसा आ रहा है?" उसका बेटा उसके पास खड़ा था। मैंने कहा, "वर्दी पर इस्तरी करानी है।"

"हम चूहड़े-चमारों के कपड़े नहीं धोते, न ही इस्तरी करते हैं। जो तेरे कपड़े पे इस्तरी कर देंगे तो तगा हमसे कपड़े न धुलवाएँगे, म्हारी तो रोज़ी-रोट्टी चली जा गी...." उसने साफ-साफ जवाब दे दिया था। उसके इस उत्तर ने मुझे हताश कर दिया था। बिना कुछ कहे, मैं उलटे पाँव लौट आया था। मन भारी हो गया था। ईश्वर से भरोसा उठ गया था। गरीबी और अभाव से अन्य किसी तरह निबटा जा सकता है, जाति से पार पाना उतना ही कठिन है।

एक मास्टर थे योगेन्द्र त्यागी। कुतुबपुर के रहनेवाले थे। आदमी तो भले थे, इतिहास और अँग्रेज़ी पढ़ाते थे। बोलते अच्छा थे। पढ़ाते भी ठीक थे। इतिहास पढ़ाते समय तारीख जिस तरह बताते थे, मैं हैरान रह जाता था। लगता था कि मास्टर साहब को इतिहास का बहुत ज्ञान है। इतिहास के प्रति मेरे मन में जिज्ञासा उन्होंने ही जगाई थी, जो आज भी बरकरार है।

पिताजी को वे पहचानते थे। जब भी मिलते, कहते, "छोटन, अपने लड़के को पढ़ने से मत रोकना।"

इतना सब होने के साथ-साथ वे कक्षा में मुझे अजीब साँसत में डाल देते थे। कोई गलती हो जाने पर पीटने के बजाय मेरी कमीज़ पकड़कर ऐसे खींचते थे कि कमीज़ अब फटी... मेरा पूरा ध्यान अपनी कमीज़ पर रहता था। अपनी ओर खींचते हुए पूछते, "सूअर की कितनी साँटे (सूअर की गोश्त की बोटी) खाई हैं? एक पाव तो खा ही लेते होगे?"

जब भी मास्टर साहब ऐसी बातें कहते, मुझे रोना आ जाता था। आँखें छलक जाती थीं। मास्टर साहब की बातें सुनकर पूरी कक्षा हँसने लगती थी। लड़के इसी बात को लेकर तंग करते थे, "अबे चूहड़े के, सूअर खाता है।" ऐसे क्षणों में मुझे वे तमाम त्यागी याद आने लगते थे जो रात के अँधेरे में छुप-छुपकर सूअर का गोश्त खाने भंगी-मोहल्ले में आते थे। मेरा मन करता, उन सबके नाम बता दूँ। जो लोग छुप-छुपकर गोश्त खाने आते थे, वे भी दिन में सबके सामने छुआछूत बरतते थे।

● चित्र- संतोष श्रीवास्तव

संकेत दाएँ से बाएँ

चित्र-पहेली

1	2	■	3	4	■	5	6	■
■	7	8	■	9	10	■	11	12
13	■	14	15	■	16	17	■	
	■	■		■	18		■	■
19		20	■	■	■	21		
	■	22	23	■	24	■	■	
	■	25		■	26	27	■	
28	29	■	30	31	■	32	33	■
■	34		■	35		■	36	

1

3

5 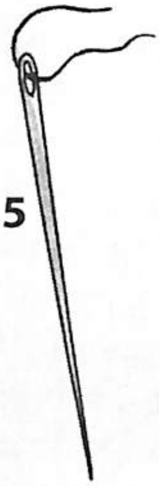

7 'नमक' में है दिल

9 'गप्प' में है कदम

11 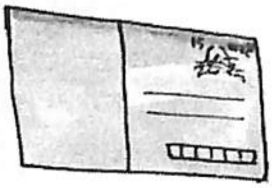

14

16 'मगन' में है दुख (उर्दू)

18 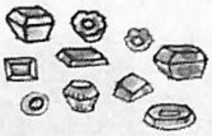

19

21 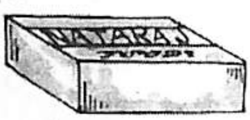

22

25

26 100 x (5+2)

28 'तलक' में है आदत

30

32 'बारात' में हैं दिन के बाद का समय

34 'लाना' का उल्टा क्रम

35 'एक लाठी' में है सही या उचित

36 तीर

संकेत ऊपर से नीचे

2

4

6
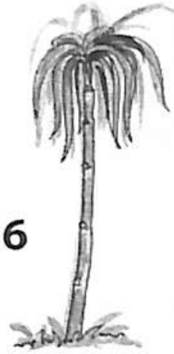

8

10 आकाश

12
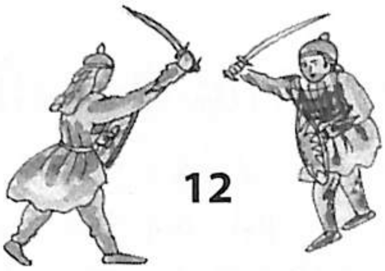

13

15
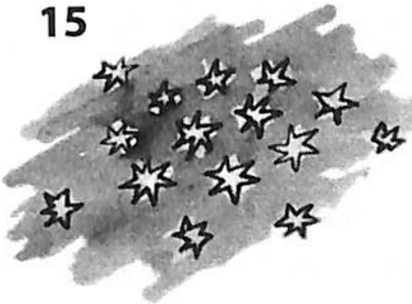

17
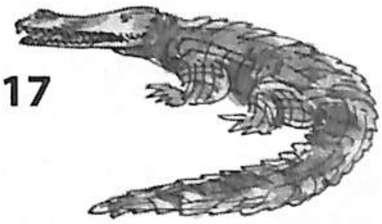

20
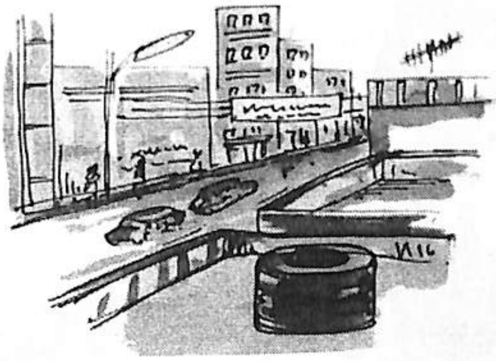

23 गुलामी

24
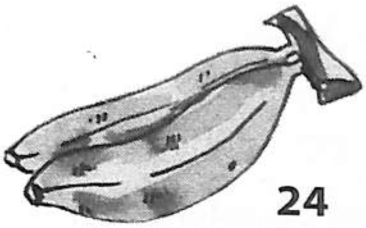

27 'सुराख' में है असल

29
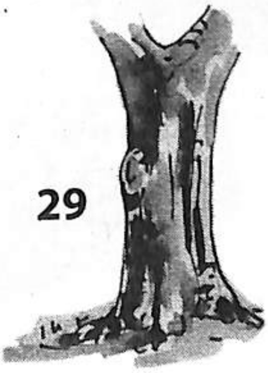

31
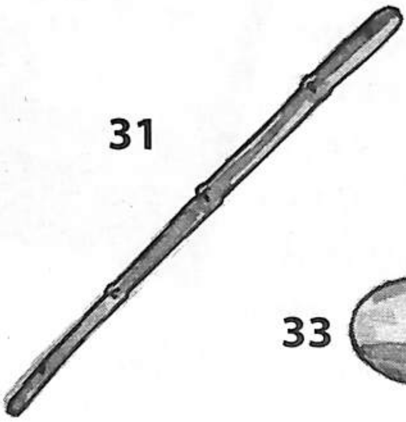

33
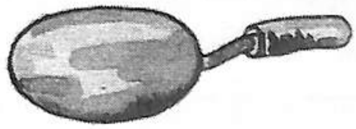

प्रस्तुति - सुलोचना देशपांडे
चित्र - कैलाश दुबे

लोककथाओं की कुछ किताबें

तुम्हारी परीक्षाएँ खत्म हो गई होंगी या खत्म होने वाली होंगी। अब बारी आती है गर्मी की छुट्टियों की। मज़े के दिनों की। खूब खेलना और मज़ेदार किताबें पढ़ना। तुम इधर-उधर से किताबें ढूँढोगे। हमने भी कुछ किताबें देखीं।

ये किताबें 'प्रथम' नाम की एक संस्था ने छापी हैं। 'प्रथम' बच्चों के लिए कई प्रदेशों में काम करती है। इन किताबों में कविताएँ, कहानियाँ, पहेलियाँ और लोककथाएँ सभी कुछ हैं। लगभग सभी किताबें छोटी और सस्ती हैं। लेकिन सब किताबें पूरी तरह से अच्छी हों ऐसा नहीं कह सकते। कुछ की कहानी अच्छी है तो कुछ के चित्र।

कहानियों की कुछ किताबें हिन्दुस्तान के तीसरे राष्ट्रपति डॉ. जाकिर हुसैन के द्वारा लिखी गई हैं। इनमें से कुछ कहानियाँ तुम्हारी पाठ्यपुस्तकों में भी हैं। ये कहानियाँ अपने मूल रूप में पहले भी छप चुकी हैं। इन्हें कुछ संशोधित कर बड़े अक्षरों और रंगीन चित्रों के साथ छापा गया है। इस संशोधन में कहीं-कहीं तो पूरी कहानी ही बदल डाली है।

ऐसी ही एक कहानी है-'मुर्गी का निराला बच्चा'। तुमने सबेरे-सबेरे मुर्गे की बाँग सुनी होगी। पर क्या तुम्हें पता है कि मुर्गा बाँग क्यों देता है? मुर्गे की बाँग पर कई लोककथाएँ प्रचलित हैं। 'मुर्गी का निराला बच्चा' भी ऐसी ही एक कहानी की किताब है। इसकी मूल कहानी काफी अलग थी। किताब रंग-बिरंगी है लेकिन इसकी भाषा कई जगह अटकती है।

एक और किताब है 'अब्बू खाँ की बकरी'। यह अब्बू खाँ और उनकी प्यारी बकरी चाँदनी के बीच की कशमकश की कहानी है। चाँदनी आज़ाद रहना चाहती है। इस किताब को पढ़कर तुम्हें पता चलेगा।

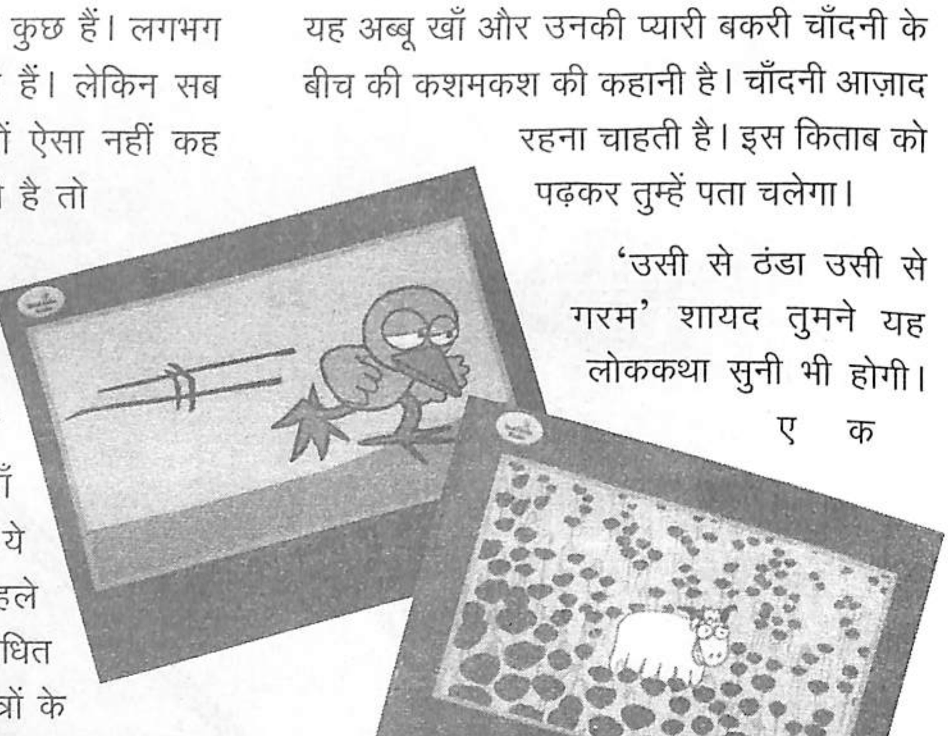

'उसी से ठंडा उसी से गरम' शायद तुमने यह लोककथा सुनी भी होगी। एक

लकड़हारे की कहानी जो न सिर्फ फूँक के जादू को बताती है, बल्कि ज़िन्दगी की सच्चाई की ओर भी इशारा करती है। इस किताब की कहानी के साथ चित्र भी ठीक-ठाक हैं।

'पुरी जो कढ़ाई से निकल भागी' और 'गुले अब्बास' भी लोककथाओं की किताबें हैं। ये छह किताबें प्रथम के सहयोग से 'यंग जुबान' समूह ने छापी हैं। हरेक किताब की कीमत बीस रुपए है। ये किताबें *यंग जुबान के-92 हौज़ खास इन्क्लेव, नई दिल्ली* या फिर '*प्रथम बुक्स, 930, फोर्थ क्रास, फर्स्ट मैन, माइको ले आऊट, स्टेज - 2, बँगलौर - 76*' से मँगाई जा सकती हैं।

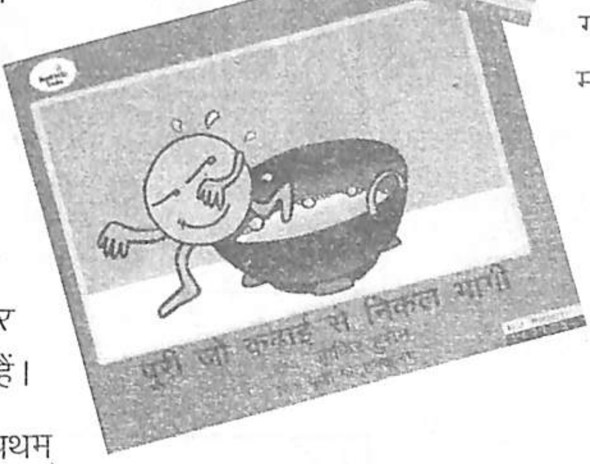

इन किताबों के अलावा प्रथम ने कई और भी कहानियाँ छापी हैं। कुछ छोटी-छोटी पुस्तकें हैं जिनमें कुछ सवाल, कुछ पहेलियाँ हैं। ऐसे सवाल जो अक्सर बच्चे पूछते हैं। पर उनका (और पहेलियों का भी सीधा उत्तर दे दिया है। अच्छा होता कि कुछ सोचने के लिए छोड़ दिया जाता।

कुछ ऐसी किताबें हैं जैसे 'उड़ते-उड़ते' या 'माँ जल्दी करो' या 'हम बाज़ार गए' जिनमें घटना कुछ खास नहीं होती। विवरण ज़्यादा हैं। इस श्रृंखला में 'मेरा बेटा कहाँ है?' मज़ेदार है। तुम चाहो तो इन मज़ेदार कहानियों को मोड़ दे सकते हो। जैसे माँ जल्दी करो में अगर माँ बत्ती बन्द करना भूल जाती तो? या हम बाज़ार गए में अगर बरतन बोलते या माँ का पर्स चोरी हो जाता तो क्या होता?

इनके आधार पर अपनी कहानियाँ बना सकते हो। चकमक को भेज सकते हो।

माथापच्ची

1.

कुल 99 खाने हैं इस आकृति में। इन खानों में, एक सफेद गोला है, एक काला गोला है। एक काला त्रिभुज है, एक सफेद त्रिभुज है। ऐसे ही सफेद और काले चौखाने हैं। गौर से देखकर बताओ कि किस लाइन में एक सफेद गोले के दाईं तरफ एक काला त्रिभुज है, बाईं तरफ एक काला चौखाना है और ऊपर एक काला गोला है तथा नीचे एक सफेद चौखाना?

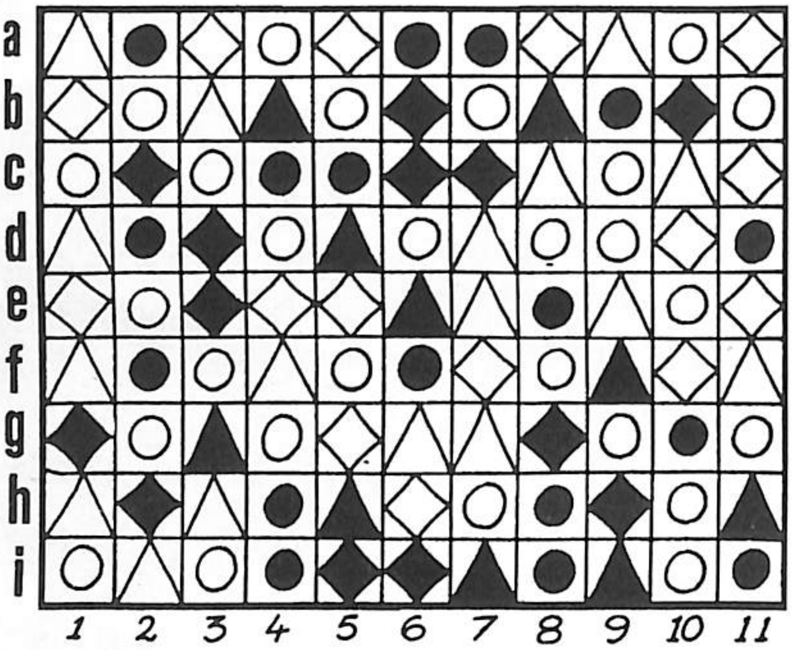

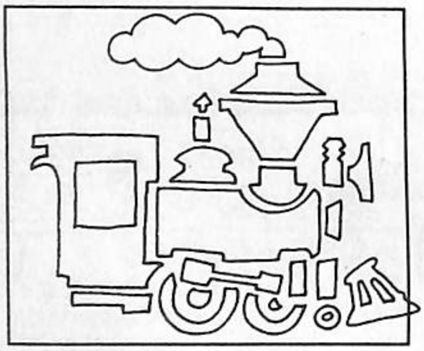

2.

यह एक रेलगाड़ी का चित्र है। ये जो चार खाने तुम देख रहे हो उनमें इसी रेलगाड़ी के पुर्जे हैं। हाँ पर इनमें एक बक्सा ही ऐसा है जिसमें इस रेलगाड़ी के सब पुर्जे हैं। क्या तुम बता सकते हो कौन सा?

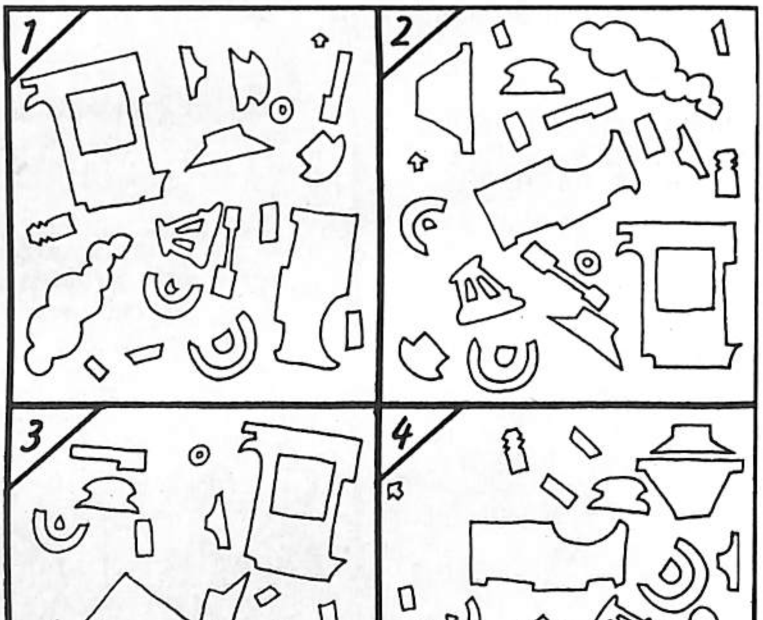

3.

यह मकड़ी पाँच रास्तों से बाहर निकल सकती है। वह एक ऐसे रास्ते से जाना चाहती है जिसमें उसे ज़्यादा से ज़्यादा जाले मिलें। क्या तुम मकड़ी की मदद करोगे?

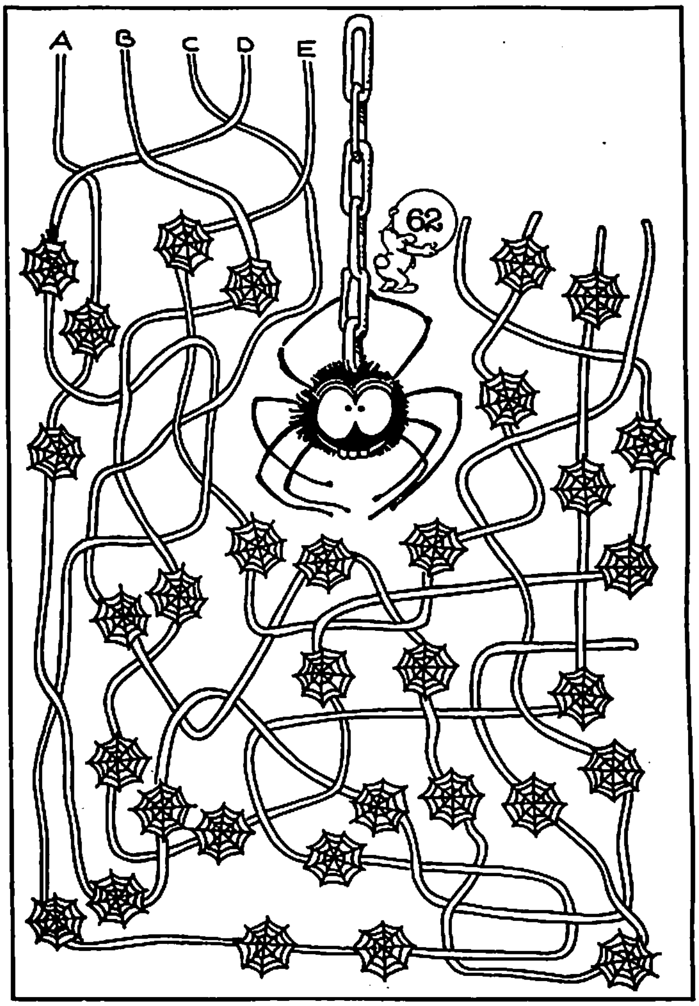

4.

ये तस्वीरें दिखती भले ही एक जैसी हों पर इनमें कुछ अंतर हैं। तुम्हें बस इतना बताना है कि इन पाँच तस्वीरों में से कौन-सी दो बिल्कुल एक सी हैं?

5.

7 8 6 9 5 10 x y 3 12

पहली नज़र में लगेगा ये अंक यूँ ही बेतरतीबी से लिखे गए हैं। पर ज़रा सी गणित से इनका आपसी रिश्ता समझ में आ जाएगा। फिर यह भी पता चल जाएगा कि x व y की जगह कौन से अंक आएँगे। है न!

महिला क्रिकेट विश्वकप

दक्षिण अफ्रीका में चल रहे महिला क्रिकेट विश्वकप में भारतीय टीम ज़ोरदार प्रदर्शन कर रही है। हमारी टीम ने अपने दूसरे मुकाबले में दक्षिण अफ्रीका को सिर्फ 81रन पर रोक दिया। इस मैच में दीपा मराठे और नीतू डेविड ने छह विकेट लिए। दीपा मराठे इस मैच की सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी चुनी गईं। उन्होंने अपने छह ओवरों में सिर्फ एक रन देकर चार विकेट चटकाए। मध्यम तेज गेंदबाज अमिता शर्मा ने साढ़े सात ओवरों में सिर्फ 23 रन देकर तीन महिला बल्लेबाजों को आऊट किया। और फिर कुछ ही ओवरों में यह लक्ष्य भी पा लिया। इसी क्रम में हमारी टीम ने इंग्लैण्ड की मज़बूत टीम को हरा दिया है। इंग्लैण्ड ने पहले खेलते हुए 139 रन बनाए। अंजुम चोपड़ा और रुमेली धर के बीच हुई शतकीय साझेदारी की बदौलत भारत ने यह मैच पैंतालीसवें ओवर में ही जीत लिया। अब हमारी टीम के चार मैचों में बीस अंक हो गए हैं। और वह ऑस्ट्रेलिया के बाद दूसरे नम्बर पर पहुँच गई है।
उम्मीद है हमारी टीम विश्वकप जीतकर लौटेगी।

क्रिकेट - न तुम हारे न हम हारे!

इन दिनों हमारे पड़ोसी देश पाकिस्तान की क्रिकेट टीम हमारे देश आई हुई है। इस दौरे में कुल तीन टेस्ट और छह एकदिवसीय मैच खेले जाएँगे। अभी तक कुल तीन टेस्ट खेले जा चुके हैं। पहला टेस्ट बराबरी पर रहा। दूसरा टेस्ट भारतीय क्रिकेट टीम ने अच्छा प्रदर्शन करते हुए जीत लिया था। फिर तीसरा टेस्ट पाकिस्तान ने जीता। इस तरह तीन टेस्ट मैचों की यह श्रृंखला 1-1 से बराबर रही। एकदिवसीय मुकाबले 2 अप्रैल से शुरू होंगे।

अलविदा! गेब्रियल

फुटबाल के शौकीन इस चेहरे को कैसे भूल सकते हैं। जी हाँ बिल्कुल सही! हम गेब्रियल बतिस्तुता की ही बात कर रहे हैं। 78 मैचों में 56 गोल दागने वाले इस जाँबाज़ ने खेल को अलविदा कह दिया है। अर्जेंटीना के इस खिलाड़ी ने तीन विश्वकप खेले।

जेम्स है या हेमिश!

अगर तुम कॉमेण्ट्री सुन रहे हो और मैच की एक टीम न्यूज़ीलैण्ड है। तो ये तुम्हें भी सुनने को मिल सकता है... ज़ोरदार शॉट, चार रन! पर पता नहीं ये जेम्स मार्शल है या फिर हेमिश! हम बात कर रहे हैं बिल्कुल एक-सी सूरत और डीलडौल वाले दो जुड़वा क्रिकेट खिलाड़ियों की।

डॉ. हरिकृष्ण देवसरे सम्मानित

भारत सरकार के संस्थान, राष्ट्रीय विज्ञान प्रौद्योगिकी नई दिल्ली ने बाल साहित्य लेखक डॉ. हरिकृष्ण देवसरे को सम्मानित किया। उन्हें यह सम्मान बाल साहित्य में उत्कृष्ट योगदान के लिए दिया गया है। सम्मान के तहत स्मृति चिन्ह तथा एक लाख रुपए की राशि दी गई। राष्ट्रीय विज्ञान दिवस के मौके पर उन्हें यह सम्मान दिया गया।

डॉ. हरिकृष्ण देवसरे बाल साहित्य पर काम करने वाले महत्वपूर्ण व्यक्ति हैं। उन्होंने दो सौ पचास से अधिक पुस्तकें लिखी हैं। इसके अलावा दूरदर्शन के लिए दस से अधिक धारावाहिकों का भी लेखन किया है। वे वर्षो तक मशहूर बाल पत्रिका पराग के संपादक रहे हैं।

डॉ. देवसरे ने अन्तर्राष्ट्रीय बाल वर्ष 1979 में बच्चों की सौ कविताएँ, बच्चों के सौ नाटक और बच्चों की सौ कहानियाँ संपादित किए। बाल साहित्य लेखन और विकास से जुड़ी कई संस्थाओं से वे सक्रिय रूप से जुड़े हैं। चकमक से भी वे एक रचनाकार की हैसियत से जुड़े रहे हैं।

निशानेबाजी

मेलबोर्न में चल रही राष्ट्रमण्डल निशानेबाजी में भारत ने कुल इक्कीस पदक जीते। इनमें बारह स्वर्ण, नौ रजत और छह कांस्य पदक हैं। मशहूर निशानेबाज जसपाल राणा ने बढ़िया प्रदर्शन करते हुए स्वर्ण पदक जीता।

पहला शतक!

स्टीव बकनर ने सौ मैचों में अम्पायरिंग करने का अनूठा रिकार्ड बनाया।

पाँच नल और धारा...

टिन का एक डिब्बा लो। इसमें चित्र में दिखाए अनुसार पाँच छेद कर लो। अब इसमें पानी भर दो। अलग-अलग छेदों से निकल रही पानी की धारा देखो। अब इन पाँचों धाराओं को हाथ के सहारे से इस तरह मिला दो कि हाथ के नीचे से ये सब धाराएँ एक ही धारा होकर गिरें।
अब हाथ हटा लो। क्या ये सभी धाराएँ पहले की तरह व्यवहार कर रही हैं?

गुब्बारे का राकेट...

पंद्रह-सोलह फुट लम्बा धागा लो। शर्बत पीने वाली नली इस धागे में पिरो लो। अब इस धागे के एक सिरे को एक कुर्सी में और दूसरे सिरे को दूसरी कुर्सी में बाँध लो। हाँ एक टेप और एक गुब्बारा भी साथ में ले लेना, आगे काम आएगा। यह गुब्बारा अब तुम्हें नली में चिपकाना है (चित्र देखो)।
गुब्बारे व नली को पीछे की तरफ खींचकर एक कुर्सी के पास कर लो। गुब्बारे में हवा भरो। और उसके मुँह को उँगली से ऐसे दबाओ ताकि हवा न निकल पाए। अब ज़रा झट से इस गुब्बारे को छोड़ो। क्या हुआ? ज़रा सोचो ऐसा क्यों होता है?

सभी चित्र : कैलाश दुबे

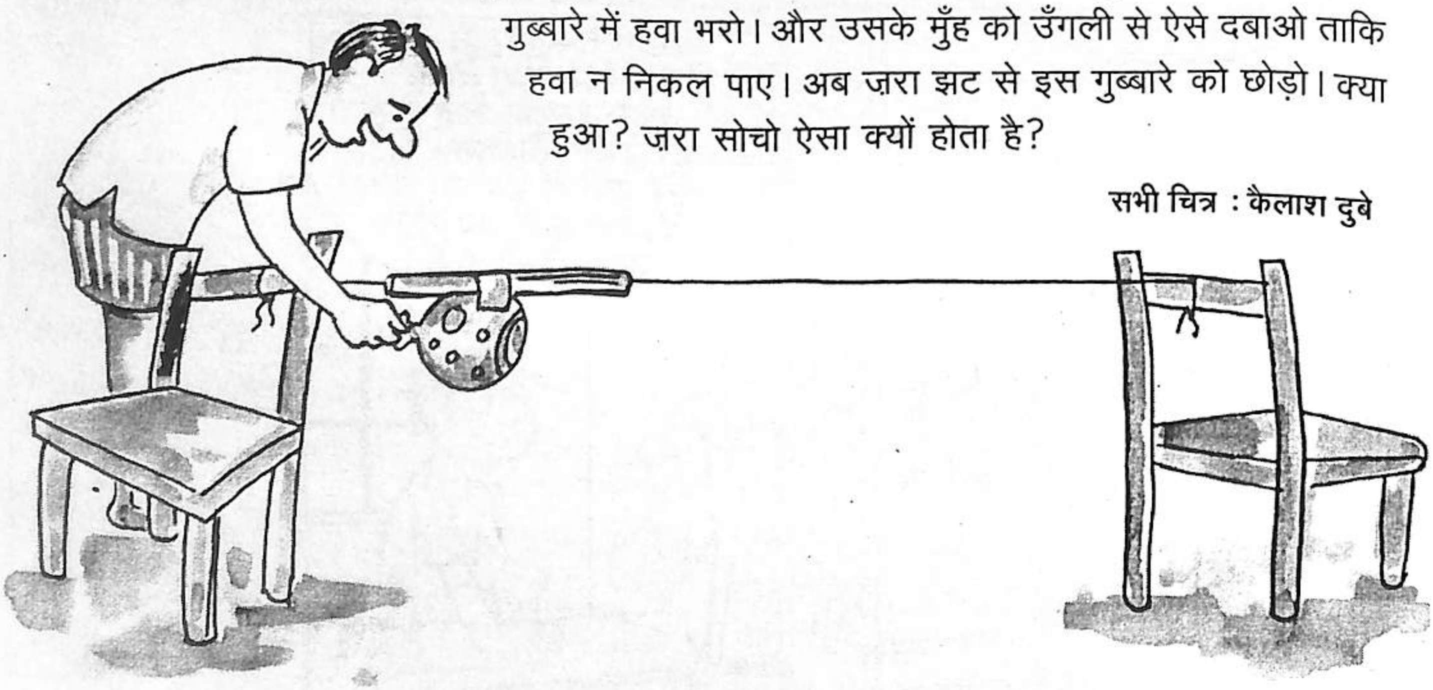

एक गुस्सैल किताब

-एच.एस. राधा

एक गुस्सैल किताब एक पुस्तकालय में रहा करती थी। वहाँ के सबसे ऊपरी खाने में। धूल से अटी-पटी। पुस्तकालय आने वाले अधिकतर बच्चे अभी छोटे थे। इसलिए वे इस किताब की कहानी भी नहीं जानते थे। उनमें से किसी ने इसे कभी इश्यू भी नहीं कराया था।

एक दिन एक छुटका-सा लड़का उस पुस्तकालय में आया। लाइब्रेरियन के पास गया। और किसी किताब की फरमाइश की। उन्होंने इशारे से बताया कि वह किताब फलाँ खाने में रखी है। यह वही खाना था जिसके ठीक ऊपर वाले खाने में गुस्सैल किताब रखी थी। इतनी ऊँचाई पर एक छुटके से लड़के के हाथ कैसे पहुँचते। उसने इधर-उधर देखा। तभी उसकी नज़र वहाँ रखे एक ऊँचे स्टूल पर गई। उसने स्टूल उठाया। और उस पर चढ़ गया। पंजे के बल खड़े होने पर भी उसके हाथ ऊपरी खाने तक नहीं पहुँच पा रहे थे।

उसने आसपास देखा कि शायद कोई मदद करे। पर सब अपने-अपने काम में लगे थे। उसने कुछ और किताबें उठाईं। एक के ऊपर एक रखीं। अब स्टूल थोड़ा और ऊँचा हो गया था। पर अब भी उसकी उँगलियाँ उस खाने तक मुश्किल से पहुँच रही थीं। उसने स्टूल पर कुछ और किताबें रख दीं। सँभलते-सँभलते वह किताबों के ढेर पर चढ़ गया। आखिर उसका हाथ उस किताब तक पहुँच ही गया जो किताब वो चाहता था। उसने किताब उठाई और उतरने की कोशिश कर ही रहा था कि उसका पैर फिसला। उसने देखा कि किसी का ध्यान उसकी तरफ नहीं है। इतनी ऊँचाई से वह फिसल रहा था... उसकी चीख निकलती ही कि अचानक उसे लगा जैसे किसी ने उसे थाम लिया हो और वापस स्टूल पर डाल दिया हो। एक हाथ जिसने अभी-अभी उसे गिरने से बचाया था, उस किताब में जाकर गुम हो गया जो सबसे ऊपरी खाने में रखी थी। पर एक किताब के अंदर भला कौन होगा? उसने सोचा शायद यह उसकी कल्पना ही है! फिर झटपट सारी किताबें और स्टूल अपनी-अपनी जगह पर रखीं। उसने जैसे ही ऊपर देखा ... यह क्या? ... वही किताब ... वही मोटी किताब, सबसे ऊपरी खाने से झाँक रही है। उसे अचरज हुआ। लेकिन अब तो पुस्तकालय बंद होने लगा था। अब ज़्यादा देर पुस्तकालय में नहीं रहा जा सकता। क्या करे?

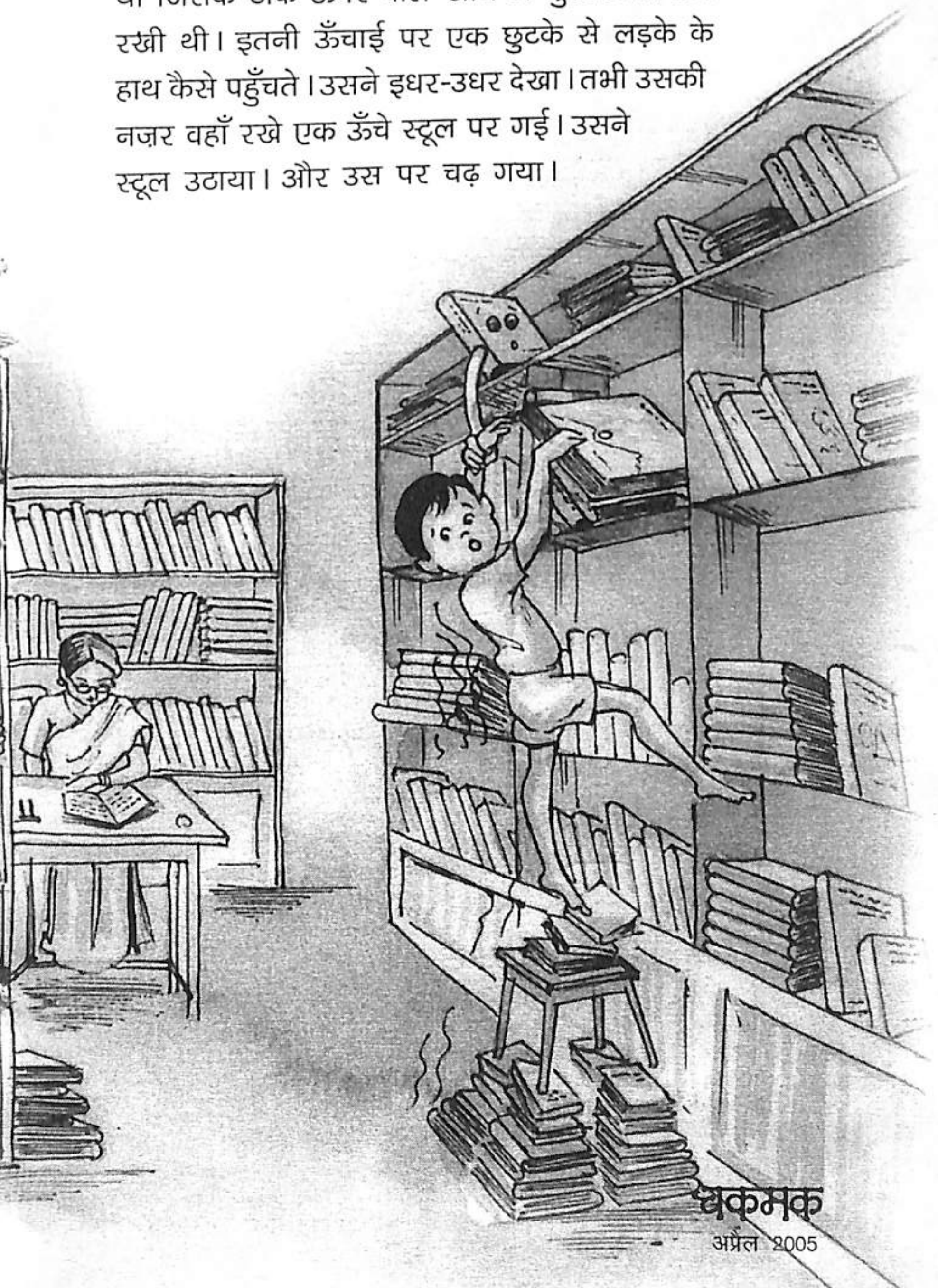

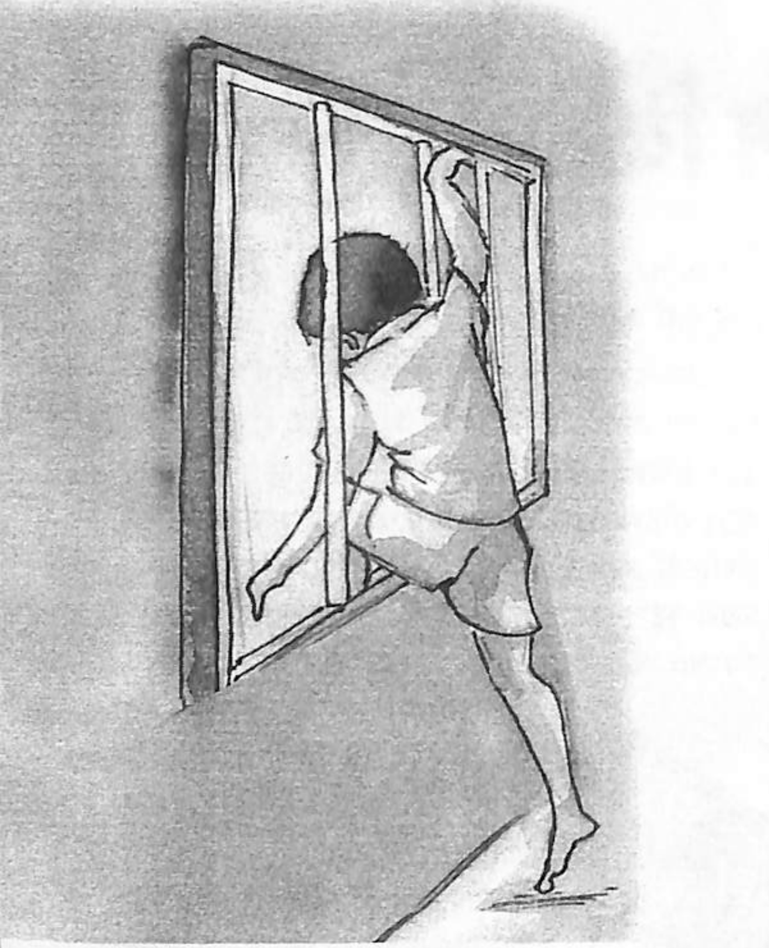

रही थी। कुछ किताबें आपस में अपनी कहानी सुना रही थीं। ऊपरी खानों की कुछ किताबें कह रही थीं, "हमारा तो सिर ही घूम जाता है जब हम इतना नीचे देखते हैं।" नई किताबें कह रहीं थीं कि जगह की इतनी कमी है। पुरानी किताबों को निकाल देना चाहिए। उन्हें कोई पढ़ता तो है नहीं। कुछ बूढ़ी किताबों को इस बात का मलाल था कि उन्हें अब कोई नहीं पढ़ता। वे इस बात से भी खफा थीं कि नई किताबें तो बस देखने भर में अच्छी हैं। उनके अंदर की सामग्री अब पहले जैसी कहाँ रही है। इस गपशप के समय भी गुस्सैल किताब लगभग चुप थी। छुटकू गुपचुप बैठा इन झगड़ों, शिकवों- शिकायतों के मजे ले रहा था।

उजाला फैल रहा था। छुटकू उसी खिड़की से बाहर निकल आया। अगली रात वो फिर इसी खिड़की के रास्ते अंदर गया। इस बार वह ऐसी जगह छुपा जहाँ से उस गुस्सैल किताब को देख सके। वही किताब जिसने उसे गिरने से बचाया था। वह देर तक उसे निहारता रहा। और सुबह होते ही फिर बाहर निकल आया।

रात को एक खुली खिड़की से वह दुबारा पुस्तकालय में घुसा। बिल्कुल गुपचुप, अँधेरे में बैठे-बैठे वह तब और हैरान हो गया जब उसने किताबों को खिलखिलाते, गपशप करते सुना। और पुस्तकालय तो शांत जगह होनी चाहिए। किताबें यह सब भी करती हैं? उसे मज़ा आने लगा था। कुछ किताबें अपनी परेशानियाँ बता रही थीं। कैसे लोग उन्हें लेकर कहीं भी पटक देते हैं। उनकी पीठ, जिल्द, पन्नों से कैसे पेश आते हैं। खाना गिरा देते हैं। सुनकर छुटकू भी सोच में पड़ गया। दूसरी कुछ किताबें उन पर ठहाकें लगा रही थीं।

एक किताब अपने किसी पन्ने का चुटकुला पढ़

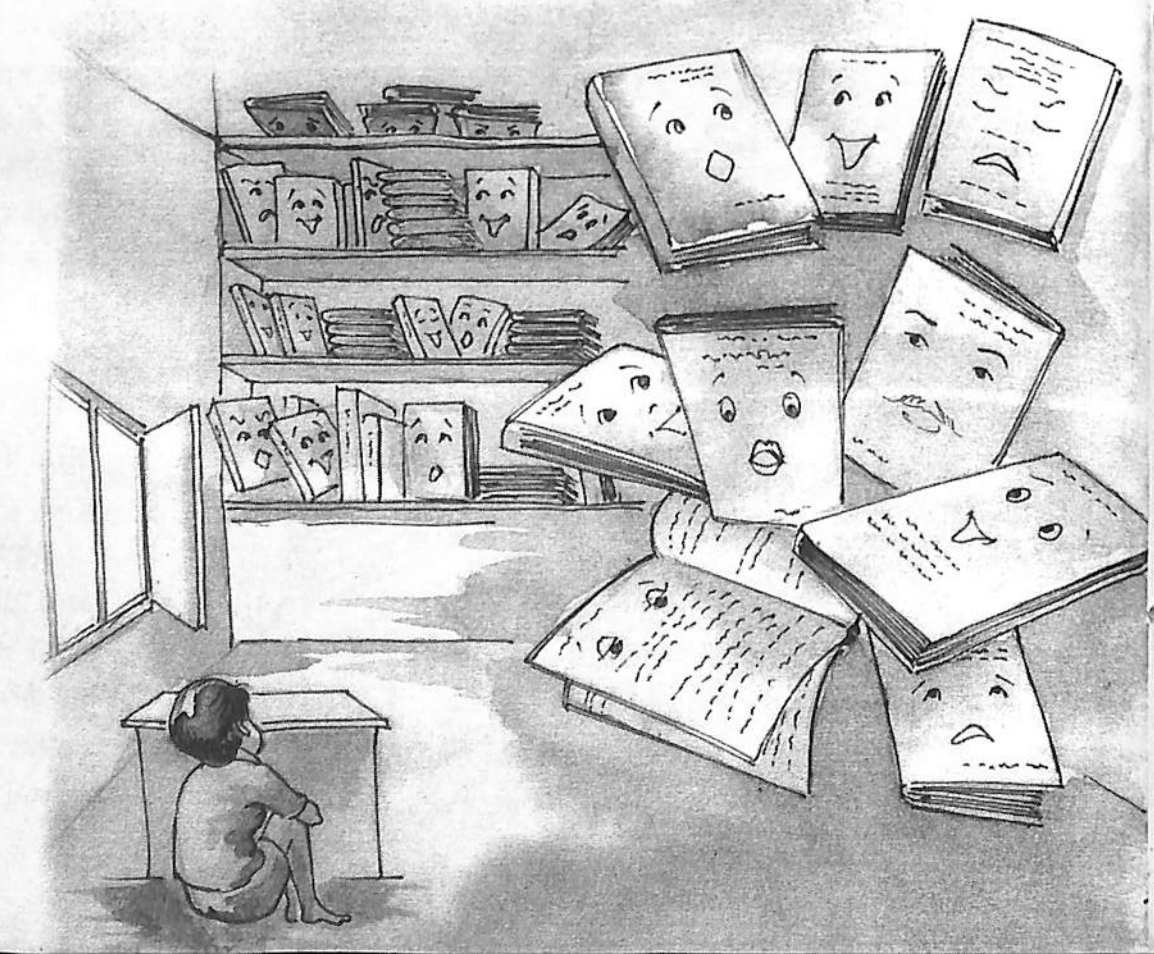

सुबह जब बुजुर्ग लाइब्रेरियन आईं, उन्होंने देखा एक छोटा बच्चा दरवाज़े पर खड़ा है। पर पुस्तकालय के खुलने में अभी देर थी। उनको कुछ काम निपटाना थे इसलिए उस दिन वे कुछ जल्दी आ गईं थीं। उन्होंने छुटकू से कहा, "ज़रा देर से आना।" पर छुटकू चुपचाप खड़ा रहा। उसे ऐसा खड़ा देख उन्होंने उसे अंदर आने की इजाज़त दे दी। छुटकू ठीक सामने की कुर्सी पर बैठ गया। कौन-सी किताब चाहिए? लाइब्रेरियन ने पूछा। छुटकू कुछ नहीं बोला। बस अपना सिर झुका लिया। कोई जवाब न पाकर बुजुर्ग लाइब्रेरियन अपने काम में लग गईं। काम करते हुए उनकी नज़र जब छुटकू पर गई तो देखा वो उसी गुस्सैल किताब को एकटक देखे जा रहा है। हद तो तब हुई जब उनकी नज़र उस गुस्सैल किताब पर पड़ी जो अपनी जगह से थोड़ा बाहर सरक आई थी। वे समझ गईं। छुटकू के आने की वजह और कुछ नहीं, यह गुस्सैल किताब ही है।

बुजुर्ग लाइब्रेरियन बहुत नरमदिल थीं। सालों से वे इस पुस्तकालय में किताबें सहेजती रही थीं। थोड़ी देर दोनों चुप रहे। बुजुर्ग लाइब्रेरियन ही बोलीं, "जिसे तुम देख रहे हो उसे हम गुस्सैल किताब कहते हैं। कभी एक बूढ़ा जिल्दसाज था। यह किताब उसी के पास हुआ करती थी। जब उसकी मौत हुई तो यह हमारे यहाँ पहुँच गई। सालों से यह बंद पड़ी है।" इसके बाद थोड़ी देर तक दोनों चुप रहे। इस बार चुप्पी छुटकू ने तोड़ी। उसने बुजुर्ग को वह सब बताया कि किस तरह इसी गुस्सैल किताब ने उसे गिरने से बचाया था। किसी तरह कलेजा मजबूत कर उसने धीमे से पूछा - "क्या मैं वो किताब ले सकता हूँ?" बुजुर्ग लाइब्रेरियन को झटका-सा लगा। उन्हें छुटकू से ऐसी उम्मीद नहीं थी। भला एक गुस्सैल किताब कौन लेना चाहेगा। कुछ सोच-विचारकर आखिर में वे मान गईं। और छुटकू को गुस्सैल किताब मिल गई।

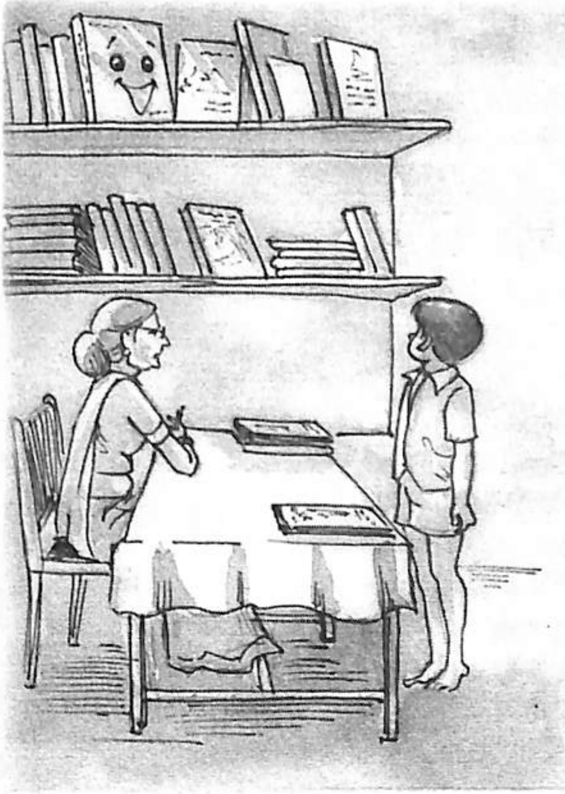

छुटकू घर पहुँचे। उसे ताक में रखा। और सोने चले गए। कोई आधी रात की बात होगी। छुटकू उठे और किताब हाथ में ले ली। तभी एक करिश्मा हुआ। गुस्सैल किताब अपने आप खुली और बातें करने लगी "....मेरा नाम गुस्सैल किताब हमेशा से नहीं था। कई साल पहले

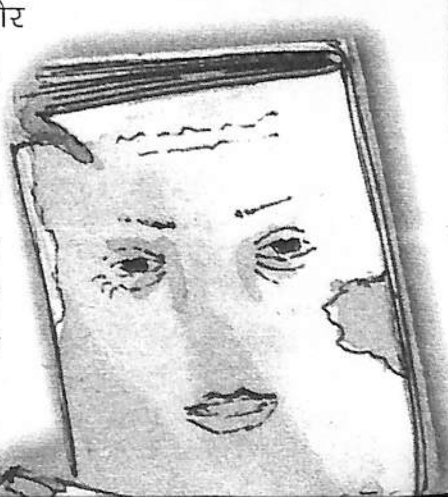

एक जिल्दसाज हुआ करता था। वह बच्चों को बहुत चाहता था। वो उन्हें उदास नहीं देख सकता था। इसीलिए उसने एक ऐसी किताब बनाई जो बच्चों को कहानी सुना सके। यह किताब ऐसे चटपटे किस्से सुनाती कि बच्चे हँस-हँस के लोटपोट हो जाते। और इस तरह वे अपनी मुश्किलें भूल जाते। इस किताब से कहानी सुनने की बस एक शर्त हुआ करती। वह यह कि एक बार में केवल एक बच्चा ही किताब खोल सकता था। दरअसल उसका मानना था कि कभी-कभी बच्चे बहुत उदास होते हैं। और वे अपनी उदासी किसी से बाँटना नहीं चाहते। यह किताब उन बच्चों के मन की बात जानकर उन्हें कहानी सुनाती थी जिससे वे अपने दुख भूल जाते थे।"

"एक दिन यह किताब चार छोटे-छोटे बच्चों के हाथ लग गई। वे सब नटखट थे। हालाँकि वे शर्त जानते थे। इसके बावजूद उनमें से हरेक ने किताब का एक-एक कोना पकड़ा। किताब अजब उलझन में पड़ गई। एक कहानी शुरू करती, थोड़ी देर बाद एक और कहानी शुरू कर देती .... ऐसा ही चलता रहा। पन्ने उड़ते रहे। कभी किताब की आवाज़ बहुत तेज़ हो जाती तो कभी वह फुसफुसाने लगती। चित्र धुँधलाने लगे। रंग उड़ने लगे। एक पन्ने के अक्षर दूसरे पन्ने पर जा रहे थे। पन्ने, पाठ सब बिखरकर खिचड़ी बन गए थे। और उलझन में फँसी कहानियाँ सुबकने लगी थीं। कई कहानियों के शब्दों के भर जाने से पन्ने ठस गए थे। आखिर में पन्ने खुलने बंद हो गए। अभी भी किताब उन बच्चों के हाथों में झूल रही थी। बच्चे शोर मचा रहे थे।"

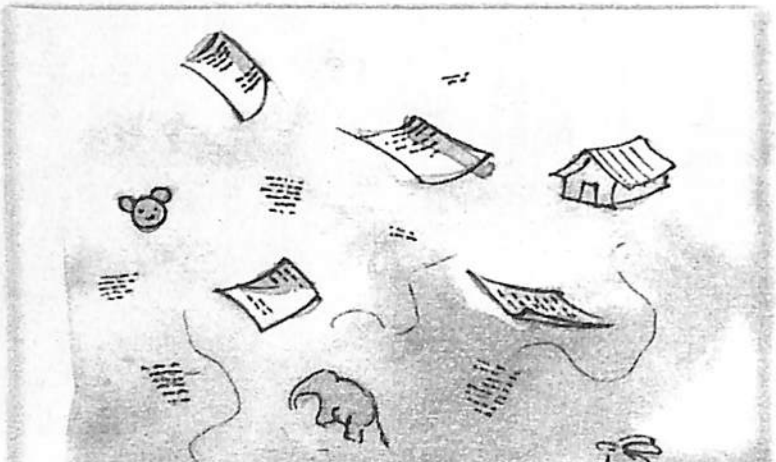

"उनका शोर सुनकर आसपास के लोग आ गए। लोग आए और कमरे का नज़ारा देखकर सहम गए। हर तरफ पन्ने, शब्द, चित्र उड़ रहे थे। किताब का गला रुँध गया था। एक साथ तरह-तरह की कहानियाँ सुनाने से वह लस्त-पस्त हो गई थी। वह चकरघिन्नी की तरह घूम रही थी। अपने पैर ज़मीन पर रखे रहने के लिए बच्चे किताब के साथ गोल-गोल दौड़ रहे थे। वे किताब को पकड़े रहने के चक्कर में कभी भी उड़ सकते थे। बच्चे दम साधे बस किताब को थामे हुए थे। किताब कहानी सुनाती रही...। इतने में जिल्दसाज वहाँ आया। लोग भीड़ लगाए खड़े थे। सब पूरी तरह सकते में डूबे थे। उन चार बच्चों को छोड़कर बाकी सब चीख रहे थे। जिल्दसाज जानता था कि अब क्या करना है। उसने बच्चों को किताब से दूर खींचा। अब किताब की उलझन कुछ कम हुई। किताब का कहानी सुनाना बंद हो चुका था। उसने किताब बंद की। अब मैं यानी आज की गुस्सैल किताब, गुमसुम, चुपचाप टेबिल पर पड़ी थी। बच्चे

भी धीरे-धीरे सामान्य हो रहे थे। अब उन्होंने बोलना शुरू किया।"

गुस्सैल किताब ने आगे सुनाया "...और फिर जिल्दसाज ने बच्चों की बातें सुनीं। सभी लोग किताब को कोस रहे थे। और उसे जल्द नष्ट करने की सलाह दे रहे थे। जिल्दसाज किताबों को बहुत लाड़ करता था। इस किताब को तो और ज़्यादा। शायद इसलिए कि यह किताब बच्चों की पसंदीदा थी और इस किताब को भी बच्चे अच्छे लगते थे। वह जानता था कि इस किताब ने जो कुछ किया उसका कारण क्या है। पर वह लोगों को क्या समझाता।"

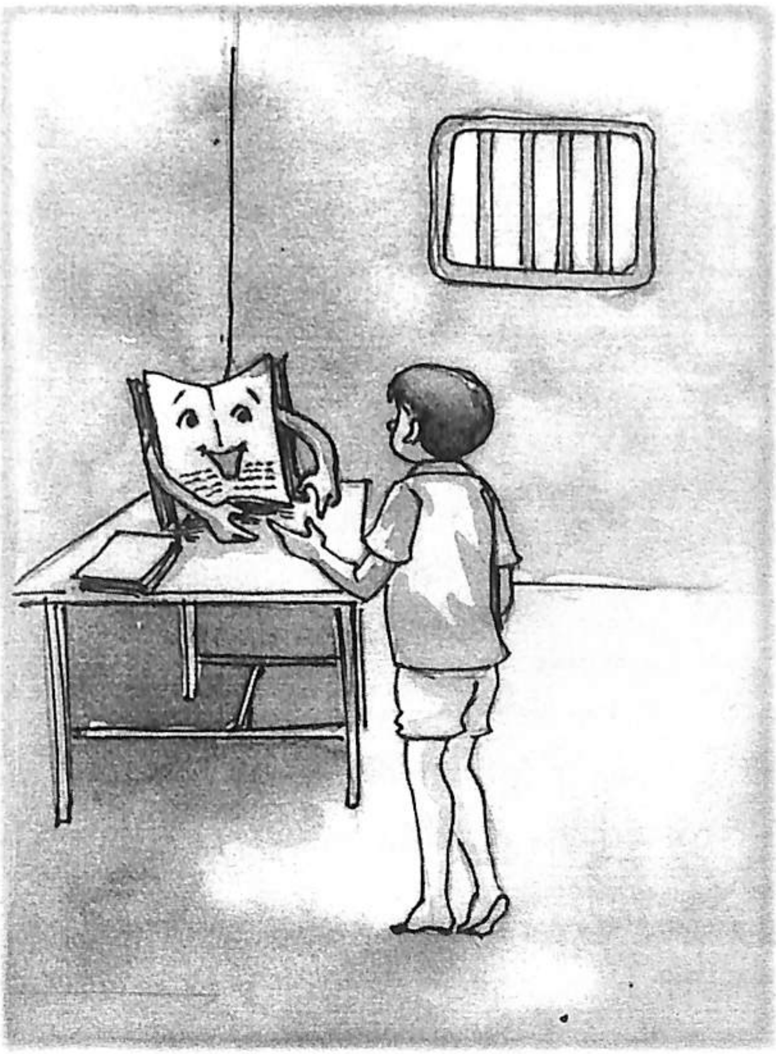

"जिल्दसाज ने लोगों से वादा किया कि वह इस मामले को सुलझा देगा। उसने किताब अपनी अलमारी में रख ली। इस घटना पर वह घण्टों सोचता रहा। वह इस किताब को बच्चों के लिए बचाना चाहता था। पर लोग इतना डर गए थे कि शायद वे फिर कभी इस किताब को बच्चों को नहीं देना चाहते थे। अगली सुबह जिल्दसाज ने अलमारी देखी। जिस खाने में उसने वह किताब रखी थी उसमें नमी आ गई थी। किताब गीली पड़ी थी। उसे बड़ा झटका लगा। क्या किताब अब कभी नहीं खुलेगी? लग रहा था जैसे किताब रात भर रोई है। उसने हज़ार कोशिशें कीं पर किताब न खुली। इसके बाद भी उसने कई बार कोशिश कीं। पर किताब न खुली तो न खुली।" किताब की आवाज़ में अब दुख-भरी नरमी आ गई थी।

"क्या तुम वही किताब हो?" छुटकू ने मासूमियत से पूछा। "हाँ!" किताब फुसफुसाई।

छुटकू को लगा, चलो इस किताब की नेकदिली से जिल्दसाज की उलझन दूर होगी। भले ही कभी खुली नहीं, पर वह ज़िन्दा थी। गुस्सैल किताब ने फिर सुनाया, "लोग सोचते रहे कि शायद जिल्दसाज ने इस किताब को सज़ा दी है। और वह कभी इसे नहीं खोलेगा। लोगों ने मुझे तभी से गुस्सैल किताब कहना शुरू कर दिया। मैं तुम्हें देखती रही हूँ। तुम किताबों से नरमी से पेश आते हो। पढ़ने में तुम्हें मज़ा आता है। उस दिन जब तुम फिसल रहे थे तो अनायास ही मेरा हाथ तुम्हें थामने पहुँच गया।" गुस्सैल किताब ने छुटकू से कहा कि वह उसे पुस्तकालय से खरीद ले। छुटकू को भी यह आइडिया पसंद आया। बुजुर्ग लाइब्रेरियन राज़ी हो गईं। क्योंकि कोई भी तो उस किताब को नहीं पढ़ता था। फिर वह काफी बूढ़ी भी हो गई थी। छुटकू ने जमा चिल्लर से यह गुस्सैल किताब खरीद ली। और अब रोज़ वह किताब छुटकू को एक नई कहानी सुनाती है - उसकी पसंदीदा कहानी।

सभी चित्र- विवेक वर्मा

तुम भी बनाओ

उड़ती तितली

जरूरी चीज़ें – कैंची या ब्लेड, मोटा कागज़, मोटा धागा, टेप, 2 खाली रिफिलें।

आकृति–1 को किसी मोटे कागज़ पर उतार लो। फिर ब्लेड या कैंची से काट लो। खाली रिफिल के टुकड़ों में कम से कम – ढाई मीटर लम्बा धागा पिरो लो।
इन खाली रिफिलों को टेप से चित्र में दिखाए अनुसार मजबूती से चिपका दो।

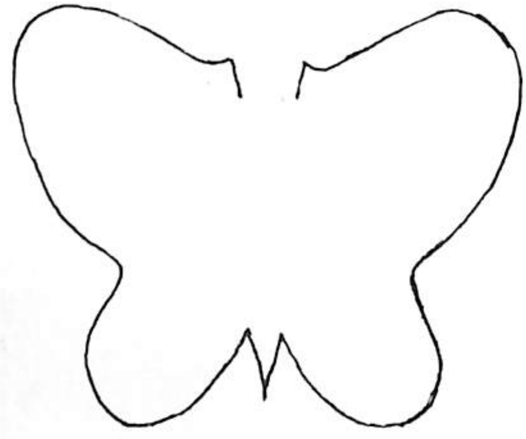
आकृति–1

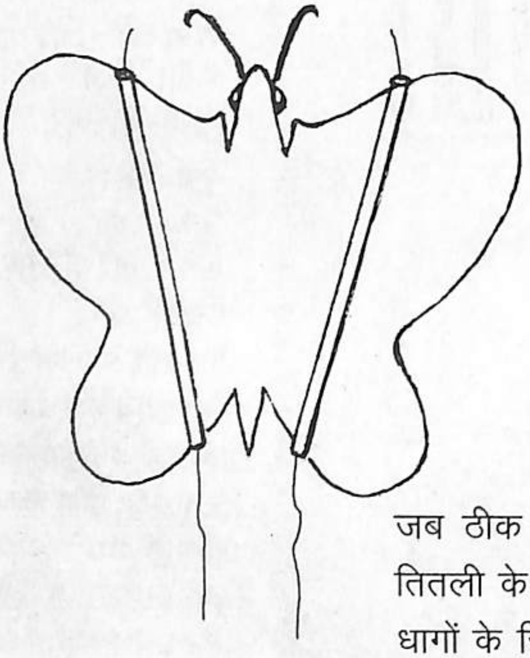

अब दो नम्बर की तितली की आकृति मोटे कागज़ पर उतार लो। और फिर कैंची से काट लो। इस तितली को पहली वाली तितली की आकृति के ऊपर चिपकाना है। ध्यान रखना रिफिल इन दोनों परतों के बीच रहे।

जब ठीक से सूख जाएँ तो तितली के मुँह की तरफ के धागों के सिरों को पेंसिल से बाँध दो। हाँ, बाँधते समय ध्यान रखना कि धागों के दोनों सिरों के बीच उतना ही फासला बना रहे जितना तितली के मुँह से निकलते हुए था। अब तितली को रंगों से सजा दो।

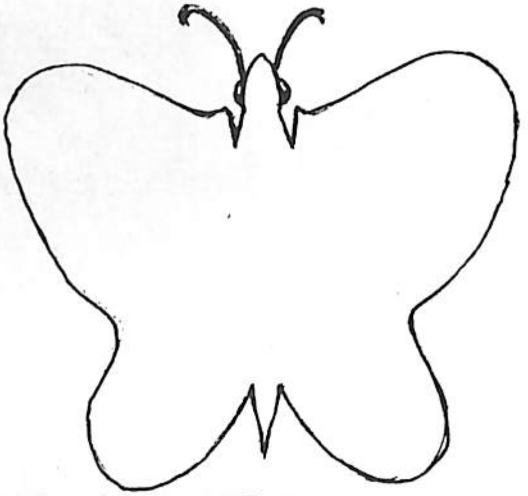
आकृति–2

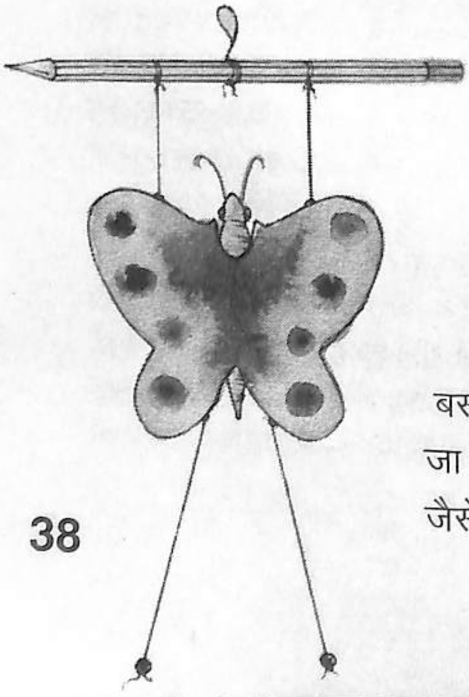

बस अब इस पेंसिल पर एक फुंदा बाँध दो ताकि इसे किसी कील से लटकाया जा सके। कील से लटकाकर निचले दोनों सिरों को क्रमशः नीचे खींचो। जैसे जैसे तुम इन सिरों को नीचे खींचोगे तितली ऊपर उड़ती जाएगी।

चित्र - विवेक वर्मा

एक मज़ेदार प्रयोग

खिले फूल किसे अच्छे नहीं लगते। लेकिन तोड़ने के कुछ देर बाद ही ये मुरझाने लगते हैं। घर पर कई ऐसी चीज़ें होती हैं जिनसे इन्हें मुरझाने से बचाया जा सकता है।

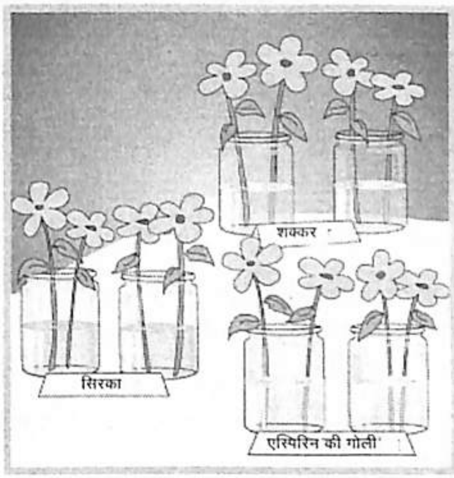

एक ही प्रजाति के 12 तंदुरुस्त फूल ले लो। ध्यान रहे कि उनके तने बराबर लंबाई के होने चाहिए।

छः डिब्बों में बराबर-बराबर पानी भरो। इनमें से दो डिब्बों में एक-एक चम्मच शक्कर, दो में एक-एक चम्मच सिरका और शेष दो में एक-एक एस्पिरिन की गोली अच्छी तरह घोल दो । डिब्बों पर यह ज़रूर लिख देना कि किसमें क्या डाला है।

अब हरेक डिब्बे में दो-दो फूल रखकर इन सबको घर में एक ही जगह पर जमा दो। रोज़ देखो कि कौन-से फूल सबसे ताज़ा नज़र आ रहे हैं।

इसी तरह तुम घर में मौजूद अन्य चीज़ों (जैसे नमक, सोडा वगैरह) को भी आज़मा सकते हो।

सवाल : जब कोई बिल्ली आइने में देखती है तो क्या उसे पता होता है कि वह अपनी ही शक्ल देख रही है?

जवाब : बहुत ही दिलचस्प सवाल है। बिल्ली तो हमें बताएगी नहीं कि वह क्या देख रही है या क्या उसे पता है कि आइने में उसका ही प्रतिबिंब है। हमें ही प्रयोग करके पता लगाना होगा।

तुम्हें शेर और खरगोश की वह कहानी तो याद ही होगी जिसमें शेर कुएँ में अपना प्रतिबिंब देखकर उसे एक और शेर (अपना दुश्मन) मान बैठता है।

1970 के दशक में गॉर्डन गैलप ने कुछ प्रयोग किए थे। वे यह देखना चाहते थे कि वनमानुषों में खुद की पहचान कितनी होती है। उन्होंने कुछ चिम्पैंज़ियों को बेहोश करके उनके चेहरे पर रंग के धब्बे लगा दिए। होश आने के बाद इन चिम्पैंज़ियों को आइना दिखाया गया। उन्होंने चेहरे पर लगे धब्बों को देखा और हाथ से उसे साफ कर दिया। उरांगुटान भी ऐसा कर सकता है मगर गुरिल्ला और बंदरों या किसी अन्य जानवर में यह बात नहीं देखी गई है।

इसके बाद कुछ और प्रयोगों से पता चला कि वनमानुषों और डॉल्फिनों में भी खुद को पहचानने की क्षमता होती है।

कुछ प्रयोगों में जानवरों को उसकी विडियो छवि या फोटो या छाया दिखाकर जानने की कोशिश की गई कि क्या वे पहचान सकते हैं कि ये छवियाँ उनकी ही हैं।

देखा गया है कि पक्षी जब आइने में अपनी शक्ल देखते हैं तो मानते हैं कि वे किसी और पक्षी को देख रहे हैं। वे यह नहीं समझ पाते कि यह उनका ही प्रतिबिंब है। कई पक्षी तो काफी देर तक इस प्रतिबिंब पर हमला करते रहते हैं। अभी तक बिल्लियों के बारे में ऐसे प्रयोग नहीं हुए हैं।

यह पेड़ ही है

भले ही ब्लू व्हेल सबसे बड़ा जीवित जीव है - हाथी से भी बड़ा, एक बड़े डायनासौर से भी बड़ा। लेकिन यह पृथ्वी पर पाया जाने वाला सबसे बड़ा सजीव नहीं है। इन जानवरों से कहीं बड़े होते हैं पेड़। कैलिफोर्निया, अमरीका के विशाल रेडवुड और सिकोइया का कोई जवाब नहीं। अधिकांश रेडवुड 90 मीटर से भी ज़्यादा लम्बे हैं। यानी लगभग 30 मंज़िल की इमारत जितने ऊँचे। सबसे लम्बा रेडवुड 113 मीटर से भी ज़्यादा ऊँचा है। विशाल सिकोइया रेडवुड जितने लम्बे तो नहीं होते हैं, लेकिन उनका तना काफी चौड़ा होता है। एक पेड़ *जनरल शेरमान* (एक सैनिक से मिला नाम) तो लगभग 83 मीटर लम्बा है। इसके तने की मोटाई करीबन 30 मीटर है। एक विशाल भीड़ को छिपा देने की कुव्वत रखता है यह।

न तो यह बर्फ है और न ही सफेद भेड़ की ऊन। यह है न्यूज़ीलैण्ड में पाया जाने वाला कुशन प्लांट यानी तकिये जैसा पौधा। हज़ारों छोटे-छोटे तनों और छोटी-छोटी लाखों पत्तियों वाला। पत्तियों को ढँके महीन बालों के कारण ही ये ऊन सरीखे दिखते हैं। इसके तने इतने पास-पास होते हैं कि कुल मिलाकर यह पौधा एक बड़े-से सफेद तकिए जैसा लगता है। इसे देखकर इस पर बैठने की इच्छा होती है। पर बैठकर देखो - ये है एकदम सख्त।

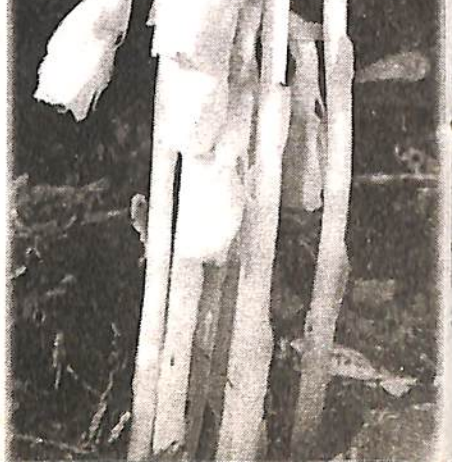

इंडियन पाइप बीड़ी सरीखे दिखते हैं। इसे यह नाम भी इसी वजह से मिला। यह एकदम सफेद हैं। तना सफेद, फूल सफेद, पत्तियाँ सफेद। लेकिन ऐसा हमेशा से नहीं था।

लाखों साल पहले इंडियन पाइप नाम के ये पौधे अपना भोजन खुद बनाते थे। जैसा दूसरे पौधे करते हैं। उस समय इनका रंग हरा होता था। लेकिन फिर इन्हें एक साथी मिल गया - इनके आसपास उगती एक फफूँद। फफूँद को मिट्टी में मौजूद पदार्थों से अपना खाना मिल जाता। इसी में से कुछ वह इंडियन पाइप को दे देता। जल्द ही इंडियन पाइप अपने सारे भोजन के लिए फफूँद पर निर्भर हो गया। धीरे-धीरे उसने अपना हरा रंग भी खो दिया। अब वो अपना खाना बना ही नहीं पाता है। और अपने साथी के बिना ज़िन्दा भी नहीं रह पाता है।

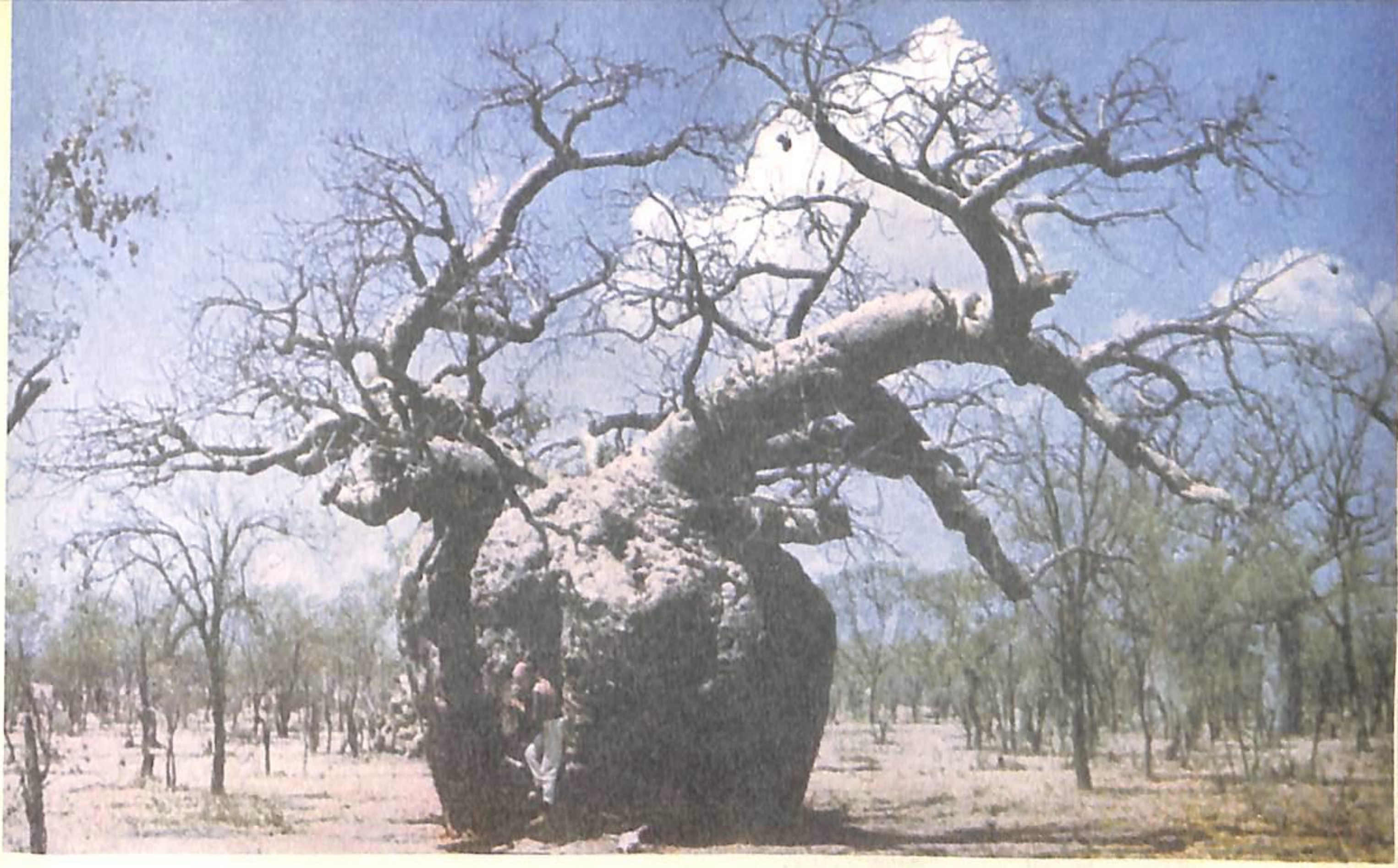

खोखले तने वाला यह विशाल पेड़ बाओबाब ऑस्ट्रेलिया में पाया जाता है। एक ज़माने में इसका तना जेल का काम करता था।

रेगिस्तान में ढेर सारे पत्थरों के बीच ये पौधे भी पत्थर सरीखे ही लगते हैं। केवल कुछ पत्तियाँ ही ज़मीन से फूटती नज़र आती हैं। मोटी, कड़ी-सी दिखने वाली ये पत्तियाँ पानी भरी होने के कारण जानवरों को भाती भी होंगी। लेकिन खाएँ तो तब जब ये नज़र आएँ।

आसपास के पत्थरों के रंग की होने के कारण इन्हें पहचानना बेहद मुश्किल है।
इन विचित्र पौधों का नाम भी कम विचित्र नहीं - पत्थर पौधे। केवल बरसात बाद ही ये साफ नज़र आते हैं। तब इनकी पत्तियों के बीच से एक फूल निकल आता है। जो एक या दो दिन तक बना रहता है।

चकमक पंजीयन क्रमांक 50309/85 के अंतर्गत भारत के समाचार पत्रों के रजिस्ट्रार द्वारा पंजीकृत। डाक पंजीयन क्रमांक म.प्र. /261/भोपाल/2003-05

अभिनव सिंह, सातवीं, फ़ैज़ाबाद, उ.प्र.

रैक्स डी. रोज़ारियो की ओर से विनोद रायना द्वारा राजकमल प्रिंटर्स से मुद्रित एवं एकलव्य, ई-7/एच.आई.जी. 453, अरेरा कॉलोनी, भोपाल-16 से प्रकाशित। संपादक : विनोद रायना